नई दिल्ली नगरपालिका परिषद्

पालिका समाचार

नई दिल्ली
पालिका समाचार
वर्ष: 43, अंक: 01-02, जनवरी-फरवरी, 2014
(द्विमासिक)

सम्पादक - मण्डल

पालिका समाचार
संरक्षक

जलज श्रीवास्तव
अध्यक्ष

मुख्य सम्पादक
विकास आनन्द
सचिव

ए. के. मिश्रा
उप-मुख्य सम्पादक

अनीता जोशी
प्रकाशक सम्पादक

सुनीता बोहाडिया
कार्यकारी सम्पादक

रीमा कामरा
सहायक सम्पादक

उषा रौतेला
अरविन्द रानी
सुमन कुमार
सहयोग

लक्ष्मण सिंह रमोला
परामर्शदाता

मूल्य
एक प्रति : ₹ 20/-
वार्षिक : ₹ 100/-
पाँच वर्षों हेतु : ₹ 400/-

सम्पादकीय

(सम्पादक की कलम से)..........

सर्वप्रथम मैं आपका नए वर्ष 2014 में अभिनन्दन करते हुए आपको अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। नये वर्ष के आगमन के साथ ही सर्द वातावरण नव वर्ष की खुशियों की गरमाहट से भर जाता है। नव वर्ष जहां हमें आत्म मंथन करने के लिए प्रेरित करता हैं, वहीं हमें यह सोचने को भी मजबूर करता है कि बीते वर्ष हम अपने परिवार, समाज एवं देश के प्रति कर्त्तव्यों का पालन करने में कितने सफल एवं सक्षम रहे है। नव वर्ष में हमें निर्धारित लक्ष्यों एवम् संकल्पों को प्राप्त करने में दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ना है इसी विश्वास के भरोसे पर ही प्रत्येक भारतवासी को विकास एवम् उन्नति की राह मिलेगी ।

सारे विश्व में गणतंत्र प्रणाली ही सबसे उत्तम है क्योंकि इसमें देश की जनता की भागीदारी होती है। हमें आजादी के उन शहीदों के बलिदान को नहीं भूलना चाहिए जिनकी कुर्बानियों के कारण आज हमारा देश स्वतन्त्र हैं। हमें देश की रक्षा, इसके गौरव एवं उन्नति के लिए सदैव समर्पित रहने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि पूरी निष्ठा, कड़ी मेहनत एवम् आपसी सहयोग के साथ राष्ट्र के विकास एवम् उन्नति में अपना भरपूर योगदान दे। गणतन्त्र दिवस राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के साथ-साथ नागरिकों में राष्ट्रीय चेतना का भी संचार करता है।

प्रकृति अपना रूप समय-समय पर ऋतु परिवर्तन द्वारा बदलती रहती है। ऋतुराज बसंत इन ऋतुओं में से एक है जो ठण्ड के बाद वातावरण में सुन्दरता एवम् मोहकता का संचार करता है। आज मनुष्य प्रकृति के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भूल गया है जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य को अनेक प्राकृतिक संकटों को झेलना पड़ रहा है। मानव जीवन को खुशहाल बनाने के लिए प्रकृति से लगातार तालमेल आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है ताकि भावी पीढ़ी को इसके बुरे नतीजों से बचाया जा सके।

मुख्य सम्पादक

इस अंक में

परिचय की एक झलक 3
नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के वर्तमान
अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव आई.ए.एस.
नववर्ष! हर्ष नव। 4
- डॉ. रामस्नेही लाल शर्मा
नई भोर में 4
- बाबूराम शर्मा विभाकर
दो कवितायें: लड़की हुई सयानी,
बेटा चला गया परदेश 5
- वीरेन्द्र गुप्त
"गणतन्त्र दिवस, दिन प्यारा है" 6
- के. के. शर्मा
खूब सीखो-खूब सिखाओ-विनोबा
का महत्त्वपूर्ण सूत्र! 6
- डॉ. उमा शशि दुर्गा
क्षणिकाएं
लघु-कथा: पहला वेतन 8
- केदारनाथ 'सविता'
सर्दियों में सुहानी धूप 9
- डॉ. विनोद गुप्ता
जिंदगी 11
- श्रीमती शिखा सेठी
दो कवितायें: जलज, 11
वापिस लौटना नहीं सीखा
लघु-कथा: जम्पी और मीमी 12
- डॉ. वासंती रामचंद्रन
सूक्तियाँ 13
- प्रस्तुति सुमन कुमार
रुदन-मानवता का सुनामी-पहाड़ की 14
- सत्य प्रसाद उपरेती
पुस्तक समीक्षा: दयानन्द सागर (महाकाव्य) 15
- मूलचन्द गुप्त
बट हू विल टेक केयर 17
- प्रेम नारायण गुप्ता
टेढ़े जुकाम के सीधे इलाज 18
- वीणा गुप्ता
कहानी: फूट डालने की सजा 20
- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
वरिष्ठों के लिए-दोहे 22
- बाबूराम शर्मा विभाकर
कहानी: बचत बहुत काम की 22
वास्तविकता-व्यक्तित्व की पहचान 23
- ऋषि मोहन श्रीवास्तव
तीन कवितायें: आत्म बोध, माँ से मैं 24
मेरे गाँव की चिन्हारी 25
- नवल जायसवाल
उद्गार अजन्मी कन्या के, लघुकथा 25
- प्रदीप बहुगुणा
प्रकृति की रूपराशि - भेड़ाघाट 26
- माला गुप्ता
अनन्य वचन 28
- रीमा कामरा
कहानी: सन्त महात्मा 28
- प्रेम भूषण गोयल
महात्मा गाँधी-अनुभूतियां एवं जीवन दर्शन 30
- पी. डी. सिंह
तीन कविताये 32
- नितिन नारंग 'समर'
हमारे आदर्श स्वामी विवेकानन्द 33
- महेश चन्द्र शर्मा
"ऋतु-बासन्ती" 35
- के॰ के॰ शर्मा
सांम्प्रदायिकता:
संकुचित मानसिकता का परिचायक 36
- चन्द्र शेखर भट्ट
मैं ढूँढता एक दुपट्टा 36
- ए. के. बहुगुणा
दो कवितायें: पता, विरासत 37
- रवीन्द्र नन्दा
उपहार, डायरी, कैलेण्डर, परिचय 38
- नित्यानन्द जोशी
परिषद् गतिविधियाँ 39-40

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, उन पर सम्पादक-मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सम्पादक को रचनाओं में संशोधन एवम् काट-छांट करने का पूरा अधिकार हैं। इन विचारों पर किसी प्रकार के आक्षेप का दायित्व भी लेखकों का ही है किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा- **सम्पादक**

सम्पर्क सूत्र

सम्पादक-पालिका समाचार, हिन्दी विभाग, कमरा नं. 1209, 12वीं मंजिल, पालिका केन्द्र, संसद मार्ग, नई दिल्ली- 110001, दूरभाष : 41501354 - 70/3209 वेबसाइट: **www.ndmc.gov.in**

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के लिए अनीता जोशी द्वारा प्रकाशित तथा

नूतन प्रिन्टर्स, एफ-89/12, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज़-1, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित, फोन नं. 011-26817055

परिचय की एक झलक

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के वर्तमान अध्यक्ष

श्री जलज श्रीवास्तव आई.ए.एस.

राजधानी के अति महत्वपूर्ण क्षेत्र को बिजली, पानी, शिक्षा, सड़क, स्वास्थ्य, स्वच्छता, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सौहार्द और पर्यावरण प्रदान करने वाली नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के महत्वपूर्ण गुरूत्तर प्रशासनिक अध्यक्ष पद को वर्तमान में श्री जलज श्रीवास्तव सम्भाले हुए हैं।

भारतीय संस्कृति से सम्पन्न परिवार में 8 फरवरी, 1961 को श्री जलज श्रीवास्तव का जन्म हुआ। श्री श्रीवास्तव ने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफन्स कालेज से भौतिकी में 20 वर्ष की आयु में ही 1981 में स्नातकोत्तर किया। उन्होंने एम.बी.ए. की डिग्री भी आई.आई.एफ.टी. से 2005–08 में अपने कार्यभार संभालते हुए प्राप्त की। प्रथम बार 1983 बैच में आई. पी.एस. परीक्षा में सफल हुए व ट्रेनिंग प्राप्त की। अगले वर्ष उन्होंने आई.ए.एस. परीक्षा उत्तीर्ण की। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री श्रीवास्तव भौतिकी–वेता होने के कारण दिल्ली विश्वविद्यालय में अपने कालेज में ही भौतिकी के प्रवक्ता भी रहे। श्रीवास्तव 1985 में असम में ट्रेनिंग के दौरान ऐतिहासिक "Assam Accord" से संबद्ध रहे।

तत्पश्चात्, श्रीवास्तव जी 1986–91 में अरूणाचल प्रदेश में उप–आयुक्त रहे। 1994 में गृह मंत्रालय में निदेशक, 2007 में भारतीय खाद्य निगम में कार्यकारी निदेशक और 2003–07 तक दिल्ली सरकार के डीएसआईडीसी में प्रबन्ध निदेशक जैसे अतिमहत्वपूर्ण पदों पर सुशोभित रहे। श्री श्रीवास्तव राजभाषा हिन्दी के हृदय से समर्थक हैं। पालिका परिषद् के सफल हिन्दी प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान करने के दौरान श्री श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में कहा कि ''हमें हिन्दी का केवल सम्मान ही नहीं करना चाहिए, अपितु अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिकतम उपयोग करना चाहिए यही हिन्दी का उचित सम्मान कहलायेगा।''

विश्व नागरिक शहर दिल्ली में रहने वाले राजनायिकों, अतिविशिष्ट लोगों और सभी नागरिकों को उच्च कोटि की नागरिक सुविधाएं, मनोहर दृश्यावली वाले पार्क व सुन्दर सड़कें व अन्य सुविधाओं में अधिकाधिक सुधार के लिए श्री श्रीवास्तव कृत–संकल्प हैं।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् एवं क्षेत्र के नागरिकों को आपसे बहुत आशाएँ हैं। हँसमुख, मृदुभाषी, विनोदी स्वभाव के धनी श्री श्रीवास्तव ईमानदारी से अपने कार्य को पूरा करने को विशेष महत्व देते हैं।

2014 नववर्ष! हर्ष नव।

— डॉ. रामस्नेही लाल शर्मा

1. मौला मन को विमल कर, दे सात्विक उत्कर्ष।
   कोई बेटी 'दामिनी', बने नहीं इस वर्ष।।
2. सत्ता को कुछ शर्म दे, व्यथित मनुज को हर्ष।
   मंहगाई को दे दया, मौला तू इस वर्ष।।
3. नव संवत् में प्रीति का, पंथ रहे निर्बन्ध।
   शिशु की उजली हंसी पर, लगे नहीं प्रतिबन्ध।।
4. कटे कुल्हाड़ी से नहीं, छैंया बाला नीम।
   मर्यादा में मुक्ति हो, मुक्ति न रहे असीम।।
5. नये वर्ष में सत्य हो, शिवसंयुत अविकार।
   सुन्दर के संयोग से, सर्जन ले आकार।।
6. कुण्ठा, कलेश, कलुष रहें, नये वर्ष में दूर।
   असन, वसन, निवसन रहे, जन–जन को भरपूर।।
7. उनके सपनों को मिले, सोने बाला ताज।
   किन्तु हमें मिलती रहे, रोटी, चटनी प्याज।।
8. मौत चुनौती दे भला, शोक मिले या हर्ष।
   झुके नहीं पर कलम का, स्वाभिमान इस वर्ष।।
9. पायें कभी न वेदना, संकल्पित संघर्ष।
   निर्मल हो मन–चेतना, हे प्रभु! पूरे वर्ष।।
10. बिकने को ना विवश हो, पनघट का विश्वास।
    धूर्त मॉल अब खेत को, रचे नहीं संत्रास।।
11. नव संवत् में बढ़ चलें, अब विकास का तंत्र।
    प्राण, बुद्धि, मन हों विमल, सांसें रहें स्वतन्त्र।।

शोध एवं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
एस०आर०के० (पी०जी०) कॉलेज
फीरोजाबाद–283 203

नई भोर में

— बाबूराम शर्मा विभाकर

नये वर्ष की नई भोर में,
अभिनव अभिनव परिवर्तन हो ।
नव नव आशा नव सपनों का,
शुभ चिंतक मन सब अपनों का,
भारत की ही नहीं विश्व का
सुस्मित निर्मल आवर्त्तन हो ।
शिल्पधरों में, सब कृषकों में,
नव निर्माणों का दर्शन हो,
बढ़े सभ्यता, रमें संस्कृतियाँ,
सौख्य मुखर हो, मिटती विकृतियाँ,
सभी स्वस्थ हों, सभी मस्त हो,
राष्ट्र–धरा पर अभिनंदन हो,
नये वर्ष की नई भोर में,
अभिनव अभिनव परिवर्त्तन हो ।

52/2, लाल क्वाटर्स
गाजियाबाद

लड़की हुई सयानी

दो कवितायें

बेटा चला गया परदेश

पढ़ लिख कर इकलौता बेटा चला गया परदेश।
बूढ़ा–बूढ़ी की आंखों में है सूनापन शेष ।।
कितने देव पितर पूजे तब
किलकारी गूंजी थी
गोद की नन्हीं जान
उस समय सबसे बड़ी पूंजी थी
अपनी इच्छा, अपनी जरूरत का भी रहा न ध्यान
बच्चा प्यारा, अर्थहीन थे ब्रहमा–विष्णु–महेश ।
मन प्यासा रहता मोबाइल–
पर जब बातें करते
चिठ्ठी रहती तो उलट पलट कर
दिन भर पढ़ते रहते
यादों में, बातों में केवल एक यही चाहत थी,
जो भी मिलें सुनाये केवल बेटे का संदेश ।
कई–कई दिन बार और
होटल में रात बिताता
मनीऑर्डर कर–करके बेटा
अपना फर्ज़ निभाता
बेटे की खुशियों में ही जीवन की खुशी झलकती,
जहां भी रहे खुशियां पाये देश हो या परदेश ।

—वीरेन्द्र गुप्त

समय बीतते समय न लगता
घर में लड़की हुई सयानी ।
तुतली बातों से बचपन में
कितनों का दुख हर लेती थी
कदम–कदम पर घर भर को
पूजा–अजान का सुख देती थी
हंसते रहते थे सभी देख
उसकी हरकत, उस की नादानी ।
समय बीतते समय न लगता
घर में लड़की हुई सयानी ।।
उसे देख कर अब महिम–सी
हो जाती सबकी मुस्काने
कभी–कभी उसकी चिन्ता
लगती रातों की नींद उड़ाने
इतने दिन तक पाला पोसा
अब होने को है बेगानी ।
समय बीतते समय न लगता
घर में लड़की हुई सयानी ।।
बात–बात में दादी–अम्मा
रीति रीति उसको समझाती
बोझ नहीं पर बोझ सरीखे
कभी–कभी वह खुद को पाती
परियों के किस्से सुनती थी
पर अब खुद हो गई कहानी
समय बीतते समय न लगता
घर में लड़की हुई सयानी।।

4/139–1ए, वैशाली,
गजियाबाद, (उ.प्र.)
मो. 09935176633

(गणतन्त्र दिवस पर विशेष)

"गणतन्त्र दिवस, दिन प्यारा है"

— के०के०शर्मा

गणतन्त्र दिवस, दिन प्यारा है,
भारत के प्रदेशों की अद्भुत
निकलें बारी–बारी झाँकियाँ।
वीर–बालकों की मुस्कानों का,
देखो अलग नज़ारा है।

अलग–अलग फटफटियों पर,
लटक रहे हैं निडर जवान।
सन्तुलन पर अनुशासन की,
पकड़ पर देखो सधी कमान।

गगन में उड़ते वायुयान के,
करतब करते अलग हैरान।
परेड और सेल्यूट की शोभा,
जोश से भरा नज़ारा है।

अलग–अलग मिसाइलों की आभा,
हर मिसाइल पर हमको नाज़।
बख्तरबन्द गाड़ी हो या,
तोप, टैंक, रॉकेट की आग।

दुश्मन के घर तक पहुँचेगी,
कमरतोड़ दे गिरे यूँ गाज़।
दुश्मन का दिल दहला दे,
जब तोप चले और हो आवाज़।

त्यौहारों में त्यौहार राष्ट्रीय,
भारत, राष्ट्र को प्यारा है।
गणतन्त्र दिवस, दिन प्यारा है,
भारत की आँखों का तारा है।

आर.जेड–2000–सी/25, (एफ/एफ)
तुग़लक़ाबाद विस्तार,
नई दिल्ली–110019

खूब सीखो-खूब सिखाओ-विनोबा का महत्त्वपूर्ण सूत्र!

— डॉ. उमा शशि दुर्गा

पूरे देश में 'सर्वोदय' का नारा देने वाले तथा भूमिहीनों के लिए भूदान यज्ञ का संचालन करने वाले आचार्य विनोबा भावे की गणना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रिय शिष्यों में की जाती है। विनोबा जी के व्यक्तित्व में ज्ञान–भक्ति और कर्म की त्रिवेणी विभिन्न धाराओं में निर्बाध रूप से बहती रही है। इस त्रिवेणी ने भारत के राजनैतिक, सामाजिक क्षेत्रों के सरोकारों को अनेक नए–नए प्रयोगों से प्रभावित किया। स्थापित मान्यताओं के नए प्रयोग करने में विनोबा जी मार्गदर्शक महात्मा गांधी से भी आगे निकलते रहे हैं। विनोबा जी की इसी शक्ति को देखते हुए एक दिन बापू के मुँह से भी निकल पड़ा "गोरख ने मछन्दर को हराया।"

सत्य और अहिंसा का देश और समाज व्यापी आन्दोलन चलाने वाले विनोबा भावे का पूरा नाम विनायक नरहर भावे था। 11 सितम्बर 1895 को जन्म लेने वाले को माँ ने वात्सल्य से 'विन्या' कहा तो गांधी जी ने प्यार से 'विनोबा' कहा और यही नाम जनमानस को अपने उत्कृष्ट गुणों से प्रेरित करने लगा। विनोबा का बचपन दादा शम्भुराव, पिता नरहर पन्त और माँ रुक्मिनी बाई से बहुत प्रभावित रहा। दादा के जीवन की पवित्रता, पिता के जीवन का वैराग्य और माँ के सरल भक्ति पूर्ण जीवन के मध्य विनोबा का बचपन शीघ्र ही धर्म और देश सेवा की बातें सोचने लगा।

परम्परागत पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ विनोबा की रूचि इन विषयों को आत्मसात करने में भी लगी रहती। बड़ोदा की सेन्ट्रल लाइब्रेरी में वे प्रतिदिन घंटों समय व्यतीत करते और लाइब्रेरी में उपलब्ध अधिकांश पुस्तकें पढ़कर ज्ञान–वर्धन करते। विनोबा

पर असली जादू किया महात्मा गांधी के सानिध्य ने। महात्मा गांधी ऐसा शिष्य पाकर गद्गद और विनोबा ऐसे मार्गदर्शक के संसर्ग से धन्य हो गए। गुरु–शिष्य की ऐसी अनमोल जोड़ी कम ही देखने को मिलती है। जब विनोबा घरवालों को बिना बताए गांधी जी के आश्रम में आते हैं तो गांधी उन्हें अपनी कुशलता का पत्र लिखने का आदेश देते हैं। उन्होंने स्वयं भी विनोबा के पिता नरहरपंत को लिखा कि 'तुम्हारा विनोबा मेरे पास है। इस छोटी उम्र में ही उसने जो तेज और वैराग्य पा लिया है, उसे पाने में मुझे बहुत वर्ष लग गए थे।' गांधी जी की विनोबा के प्रति यह दृष्टि विनोबा के प्रचार को व्यक्त करती हैं। दूसरी ओर विनोबा भी गांधी जी ओर आकर्षित होते चले जाते हैं। विनोबा ने अपने इस आकर्षण के सम्बन्ध में लिखा है– 'बचपन में मेरे मन में बंगाल के लिए बड़ा भारी खिंचाव था। राममोहन, रवीन्द्रनाथ, रामकृष्ण, विवेकानन्द और अरबिन्द मेरे मन्त्र जैसे देवता थे। मन में बड़ी साध थी कि कभी बंगाल जाऊंगा। सन् 16 में घर छोड़कर ब्रह्म की खोज में बाहर निकला। काशी गया। सोचा था कि वहां से हिमालय जाउंगा। बंगाल की बात भी मन में छिपी पड़ी थी। दैवयोग से दोनों में से एक भी सोच पूरी नहीं हुई। चला गया गांधी जी के पास और वहां मेरी दोनों साधें पूरी हो गई। बापू में मुझे मिल गई हिमालय की शान्ति और बंगाल की क्रान्ति।

पहले साबरमती और फिर वर्धा के आश्रमों में रहते हुए विनोबा ने अनेक प्रयोग किए। वे स्वयं भी बड़ी कड़ाई से नियमों का पालन करते और दूसरों से भी करवाते। विनोबा की इस कड़ाई से बहुत लोग आश्रम छोड़ने लगे। आश्रम के अन्य अधिकारी बहुत चिन्तित हुए किन्तु विनोबा का आदेश था, जाते हैं, तो जाने दीजिए न! लोगों के लिए हमें आश्रम के नियम ढीले नहीं करने चाहिएं। नियमों का पालन करते हुए जो टिके सो टिके। दो–चार ही पक्के आदमी रहें तो भी हर्ज नहीं, सैंकड़ों ढुलमुल लोग किस काम के।"

विनोबा ने तो धुलिया जेल को ही आश्रम बना दिया था। उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'गीता प्रवचन' धुलिया जेल की ही देन है। यह पुस्तक विनोबा को स्वयं इतनी प्रिय थी कि वे आटोग्रॉफ मांगने वाले लोगों को इसी पुस्तक पर आटोग्रॉफ दिया करते थे। गीता के समस्त रहस्य विनोबा ने इसमें उड़ेला है। यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि अंग्रेजी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है और विदेशों में भी इसके अनेक पाठक हैं।

वेद का 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' का आशय विनोबा के सर्वोदय भाव में लक्षित होता है। उन्होंने घर–घर में सर्वोदय पात्र रखने के लिए समझाया जिसमें एक मुट्ठी अनाज प्रतिदिन डालने के लिए कहा। इसके लिए उन्होंने देश की स्त्रियों को प्रेरित किया। सर्वोदय पात्र और सर्वोदय साहित्य के प्रचार का दायित्व उन्होंने बहनों को सौंपा। सर्वोदय के लिए उन्होंने भूदान आन्दोलन संचालित किया। विनोबा ने नेता नहीं कार्यकर्ता तैयार किए। वे स्वयं कार्यकर्त्ता बनकर ही सर्वोदय का प्रचार–प्रसार करते रहे। खूब सीखना, खूब सिखाना विनोबा के जीवन का महत्त्वपूर्ण सूत्र था। कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का अपूर्व उत्कर्ष विनोबा के जीवन में देखने को मिलता है। उनके व्यक्तित्व के विविध पहलू राष्ट्र निर्माण के लिए केन्द्रित थे। राष्ट्र पुनर्रुत्थान के लिए विनोबा ने अनेक उपयोगी विचार दिए। यदि भावी पीढ़ी उनका अनुशीलन करते हुए प्रयोग में लाए तो निःसन्देह भारत आत्मनिर्भर एक महान शक्ति बन सकता है।

74, साक्षार, आपार्टमेन्ट,
यूनिवर्सिटी टीचरस सोसाइटी,
ए–3, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली–110063

क्षणिकाएं

– केदारनाथ 'सविता'

1. **सुखः**

सुख है
एक नर्तकी;
जो आज
बूढ़ी हो चुकी।

2. **फैशनः**

फैशन का दर्पण
और चमकाने के चक्कर में
पीछे से खुरच गया है
यहां–वहां,
अब इसमें पुरुष भी
नजर आते हैं स्त्री।

3. **लाशः**

आज फिर
एक लाश
सड़क पर पाई गई;
मौत का कारण
वही थी
– जिंदगी।

4. **पत्थरः**

शिल्पकार
पत्थर में इन्सान जगाने के लिए
हथौड़ियों की चोट करता रहा;
और यहां इंसान
इंसान की चोट से
पत्थर होता रहा।

5. **पत्नी–भयः**

शादी के साक्षी
चांद–सितारे
अब पत्नी के आगे
दिन में ही नजर आने लगे।

6. **विडम्बनाः**

सत्य की मूर्ति
महात्मा गाँधी की तस्वीर
कक्षा से चुराकर
छात्र झूठ बोल गया।

लघु–कथा

पहला वेतन

दिवाकर आज बहुत खुश था। उसकी नौकरी सिंचाई विभाग में टाइपिस्ट पद पर लग गई थी। दिवाकर के वृद्ध पिता दिवाकर से अधिक खुश थे। बोले– "अब मेरे सारे अरमान पूरे हो गये।"

रात में बिस्तर पर बूढ़ी आँखों में खुशी के आंसू और सुंदर सपने दोनों एक साथ तैर रहे थे। मन बहुत दूर–दूर उड़ रहा था। "मेरा पुत्र पहली तारीख को वेतन लाकर मुझे देगा और खुशी से कहेगा– "बाबू, लो यह मेरी पहली कमाई है। इसको आप चाहे जैसे खर्च करें।" मगर मैं उसे अपने माथे चढ़ाकर गिनकर दिवाकर को आशीर्वाद के साथ लौटा दूंगा।

मात्र दस रुपये उसमें से ले लूंगा, ताकि मेरा बेटा नाराज न हो जाये। घर का सारा खर्च तो उसे ही चलाना है। मुझे अब और क्या चाहिए? बस दो जून की रोटी। वह तो मेरी पेंशन से मिल ही रही है।"

बूढ़ी आँखों में कब नींद आ गई, पता नहीं चला। दिवाकर ने अपने पिता से वेतन के बारे में कुछ नहीं बताया। उसके पिता सोच रहे थे– "अभी वेतन नहीं मिला होगा। हर विभाग में पहली तारीख को ही वेतन नहीं मिल पाता है। फिर इसकी नई नौकरी है। देर–सबेर होती रहती है।"

आज आठ तारीख को उसके पिता ने शाम को दिवाकर से उसके वेतन के बारे में पूछ ही लिया– "बेटा, तुम्हारा वेतन अभी तक मिला या नहीं?"

"जी बाबू जी, वह तो पहली तारीख को ही मिल गया था, और खर्च भी हो गया।"

दिवाकर इतना बोलता हुआ दूसरे कमरे में चला गया।"

पुलिस चौकी रोड,
लालडिग्गी, सिहगढ़ गली (चिकाने टोला)
मीरजापुर–231001 (उ०प्र०)

सर्दियों में सुहानी धूप

– डॉ. विनोद गुप्ता

सर्दी के दिनों में धूप कुछ सुहानी हो जाती है। यह विटामिन डी का सबसे बढ़िया स्रोत है इसलिए इसका जमकर सेवन करें।

हमारी त्वचा में एर्गेस्टरॉल नामक एक पदार्थ होता है जो सूर्य की पराबैंगनी किरणों के प्रभाव से विटामिन डी में बदल जाता है।

विटामिन डी का सेवन मनुष्य को स्वस्थ, निरोगी तथा दीर्घायु बनाए रखता है। वैज्ञानिकों ने 57 हजार लोगों पर इसका अध्ययन किया और पाया कि जो लोग इसका सेवन करते थे, उनमें स्वास्थ्य समस्याएं बहुत कम पाई गई हैं।

विटामिन डी मल्टीपल सिरोसिस में काफी प्रभावी हो सकता है। खासतौर पर गर्भावस्था में इस विटामिन की कमी से इस बीमारी का खतरा बढ़ जाता है। यह विटामिन एक तरह के जीन को रेग्यूलेट करता है जिसमें समस्या आने से व्यक्ति मल्टीपल सिरोसिस से घिर सकता है। यदि गर्भावस्था में इसका सेवन किया जाए तो इस बीमारी के 80 प्रतिशत प्रकरण घट सकते हैं।

विटामिन डी की वजह से कैल्शियम का अवशोषण होता है। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि कैल्शियम हड्डियों की मजबूती के लिए कितना जरूरी है। यदि आप पर्याप्त मात्रा में विटामिन डी का सेवन करते हैं तो आपका हड्डियों से जुड़ी बीमारियों से बचाव हो सकता है। वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में पाया कि यह विटामिन न केवल मांसपेशियों को मजबूत बनाता है अपितु शरीर में आस्टियोकैल्किन नामक प्रोटीन के निर्माण में भी मददगार होता हैं जो बोन, मांस को बढ़ाता है जिससे फ्रेक्चर के खतरे कम हो जाते हैं।

दांतो के लिए भी विटामिन डी बहुत लाभदायक है। इससे दांत स्वस्थ व मजबूत बने रहते हैं।

विटामिन डी का सेवन कैंसर से भी बचाता है। इसकी कमी कैंसर का कारण बन सकती है।

विटामिन डी की कमी से पैरों में ऐंठन की समस्या उत्पन्न हो सकती है जो लोग समुचित मात्रा में इसका सेवन करते हैं, वे इस समस्या से बचे रहते हैं।

शरीर को जरूरी विटामिन डी की मात्रा सिर्फ पाँच मिनट धूप में घूमने से मिल जाती है।

एक अमेरिकी अध्ययन में पाया गया है कि ठंड के दिनों में यदि विटामिन डी की भरपूर खुराक ली जाए तो पीठ और कमर दर्द से आसानी से निजात मिल सकती है।

अध्ययन में कमर और पीठ दर्द के 360 मरीजों में विटामिन डी के स्तर की जांच की गई। आश्चर्यजनक रूप से सभी में विटामिन डी की मात्रा अपर्याप्त थी। इन मरीजों को तीन माह तक धूप का खूब सेवन कराया गया। तीन महीने बाद विटामिन डी की मात्रा सुधरने के साथ ही उन्हें कमर और पीठ दर्द से पूरी तरह निजात मिल गई।

शोधकर्ता डा. स्टीवर्ड के अनुसार, विटामिन डी शरीर के लिए बेहद जरूरी हैं क्योंकि यह सीधे तौर पर हड्डियों के स्वास्थ्य से जुड़ा होता है। शरीर में इसकी कमी से हड्डियों की सतह कमजोर हो जाती है जो असहनीय दर्द का कारण बन जाती है। शरीर के भार का केन्द्र कमर होती है। रीढ़ की हड्डी पूरी तरह कमर पर टिकी होती है। विटामिन डी की कमी से रीढ़ के लिए शरीर का भार ढो पाना बड़ी चुनौती बन जाती है। सूर्य की किरणें यानी धूप इस समस्या से निजात दिलाती है।

धूप हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं। यही नहीं सूर्य की किरणों में रोगाणुनाशक शक्ति भी होती है। धूप का सेवन किसी औषधि से कम नहीं है। इससे रक्तकोश बढ़ते हैं जोड़ों का दर्द और सूजन दूर होती है और मोटापे से मुक्ति मिलती हैं।

आस्ट्रेलिया में हुई एक रिसर्च के अनुसार, यदि बच्चे धूप में थोड़ा वक्त गुजारें तो इससे उन्हें आखों में होने वाली समस्या नहीं होगी। हर दिन धूप में दो घंटे बिताने से पास की चीजों को देखने में होने वाली दिक्कत में सुधार होता हैं। ज्यादा पढाई–लिखाई करने वाले बच्चों को यह समस्या होती है। धूप में रहने से बच्चों की नजर कमजोर नहीं होगी।

धूप स्नान या धूप के सेवन का सही समय सूर्योदय के समय का है। सर्दियों में सूर्योदय से लेकर सुबह नौ बजे के बीच धूप का सेवन किया जा सकता है। धूप सेवन की अवधि पाँच मिनट से लेकर आधा घंटा तक हो सकती है। धूप सेवन का अर्थ तभी है जब शरीर का अधिकांश भाग खुला हो। इसके लिए हरी घास सर्वाधिक उपयुक्त है। यदि वह न हो तो अपने घर की खुली छत पर भी इसका सेवन किया जा सकता है।

प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथ अथर्ववेद में सवेरे धूप स्नान को हृदय को स्वस्थ बनाए रखने का कारगर तरीका बताया गया है। कहा गया है कि जो व्यक्ति सूर्योदय के समय सूर्य की लाल रश्मियों का सेवन करता है, उसे हृदय रोग कभी नहीं होगा। ग्रंथ में यह भी लिखा है कि सूर्योदय के समय सूर्य की लाल किरणों के प्रकाश में खुले शरीर बैठने से पीलिया रोग में भी लाभ होता है। आधुनिक चिकित्सक भी ऐसे बच्चों को जो पैदा होते ही पीलिया–रोग के शिकार हो जाते हैं, उन्हें सूर्योदय के समय सूर्य किरणों में लिटाते हैं, जिससे अल्ट्रा–वायलेट किरणों के संपर्क में आने से उसके शरीर के पिगमेंट सेल्स पर रासायनिक प्रतिक्रिया आरंभ हो जाती हैं और बीमारी में लाभ होता है।

धूप का सेवन लाभदायक तो है, पर अति हर चीज की बुरी होती हैं। ज्यादा देर तेज धूप में रहने से सूर्य की किरणों तथा अल्ट्रावाइलेट विकिरणों का सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अधिक समय तक धूप में रहने से त्वचा का रंग काला हो सकता है। ऐसा धूप द्वारा मिलेलिन सेल्स को उत्तेजित करने से होता है। धूप की वजह से सनबर्न, एक्टिलिक खुजली पैदा करने वाली गठानें आदि की समस्या उत्पन्न हो सकती है। धूप छपाकी का कारण भी बन सकती है जिसमें खुजली चलने वाले चकते पड़ जाते हैं। जिन्हें डिहाईड्रेशन की शिकायत हो, उन्हें धूप से बचाना चाहिए। बुखार आने पर भी धूप का सेवन न करें, अन्यथा शरीर का तापमान और बढ़ सकता है। इसी प्रकार त्वचा के कैंसर, सफेद दाग, एक्जिमा आदि से पीड़ित व्यक्ति भी धूप में अधिक देर तक नहीं रहे।

43/2, सुदामा नगर, रामटेकरी,
मंदसौर– (म०प्र०) 458001

जिंदगी

— श्रीमती शिखा सेठी

आज अचानक जिंदगी से मुलाकात हो गई
दो घड़ी के लिये कुछ बात हो गई
कहने लगी क्यूं चेहरा बुझा हुआ है, मन तुम्हारा उदास है
जबकि प्रभु का दिया हुआ इतना तो तुम्हारे पास है
मैने कहा कोई शक नहीं इतना कुछ प्रभु से पाया है
उम्मीद से ज़्यादा दिया, झोली में नहीं समा रहा
क्यूं है फिर भी मन उदास समझ नहीं पा रहा
कहने लगी कभी रोते को हंसाया करो
किसी भूखे को खिला कर फिर कुछ खाया करो
कभी किसी गरीब बच्चे को पढ़ाया–लिखाया करो
गलती से भी कभी गरीब का मन न दुखाना
कभी किसी पंछी को चुगा दो दाना
घड़ी दो घड़ी किसी बुजुर्ग के साथ समय बिताओगे
दो पल के लिए उसे अपना बनाओगे
सुबह शाम सत्संग में कुछ समय बिताओगे
तब जो फर्क तुम्हारे चेहरे पर आयेगा।
उसे देख तुम खुद ही मुस्काओगे।
इन कामों में खर्च भी न होगा ज्यादा
पहले से ज़्यादा खुश रहोगे, यह जिंदगी का वायदा।

नर्सरी अध्यापिका
न. पा. नर्सरी स्कूल
नेताजी नगर।

दो कवितायें

"जलज"

— डॉ. वासंती रामचंद्रन

खिलते हैं फूल कई
लाल पीले सफेद गुलाबी
गालों पर ढुलकती है
कुछ बूँदे ओस की
वे खिलखिलाती हैं तब तक
पंखुड़ियाँ नहीं झड़ जाती जब तक
अलग है 'जलज'
नहीं इन फूलों की तरह
खिलखिलाता नहीं वो
मुस्कुराता है मंद–मंद
दिन में हुए दोष का
दंड देता है,
केवल एक रात की
सज़ा सुनाता है,
अनवरत मंडराते भौंरों को
चुपके से अपने
आगोश में लपेट लेता है।

सी–II, सहयाद्रि,
प्लॉट–5, सैक्टर–12,
द्वारका, नई दिल्ली–110078

"वापिस लौटना नहीं सीखा"

– डॉ. वासंती रामचंद्रन

प्रीत की है परवानों ने
दीप की जलती शिखा में
प्रीत की तपिश को
उतारा है मैंने
अपने हृदय में
बांटा है कायनात के
कोने कोने में,
जलकर राख होना नहीं सीखा।

उद्गम से निकल
ऊबड़–खाबड़ राहों में
बहती नदी,
बढ़ती है आगे, आगे
और आगे,
देती है ताल
कल–कल का समतल में
सीखा है मैंने बहुत कुछ,
नदी की शीतलता से
लेकिन लक्ष्य को भूल,
वापिस लौटना नहीं सीखा।

लघु–कथा

जम्पी और मीमी

जम्पी बहुत छोटा था जब उसे अपनी माँ सोनी से बिछड़ना पड़ा था। कुछ शरारती बच्चे खेल–खेल में उसे मेघा और सरस के बगीचे में छोड़ गये थे। तब से वह उन्हीं के यहाँ पल रहा था। शुरू में उसे एक मुलायम रस्सी में बांधकर रखा जाता था, पर अब नहीं। वह अब तेज भौंकने भी लगा था और घर की रक्षा भी करता था। मेघा, सरस की मम्मी उसे कुत्ते के रूप में नहीं अपने तीसरे बच्चे की तरह देखती थी। मेघा, सरस स्कूल से आने के बाद कपड़े बदलते, होमवर्क करते, खाना खाते फिर शाम को उसके साथ खेला करते थे। उसके लिये स्पेशल बिस्कुट बाजार से पापा लेकर आते, वह दूध, चावल बड़े शौक से खाया करता।

पड़ोस की मीमी बिल्ली यह सब देखा करती, उसे इस बात की ईर्ष्या होती कि उसे इतना प्यार क्यों नहीं मिलता? शाम को उसका भी मन जम्पी की तरह गेंद खेलने का करता, लेकिन अरूण, अमित उसे अपने साथ खेल में शामिल नहीं करते थे। ऐसा करने के कई कारण थे, लेकिन एक बहुत बड़ा कारण था, मीमी बिल्ली की चोरी की आदत।

दोनो घरों के बीच एक पतली सी दीवार थी। जब बच्चे गेंद खेल रहे थे तो उस शाम गेंद उछलकर अरूण, अमित के अहाते में जा गिरी। उसे लाने के लिए जम्पी दीवार पार कर वहाँ पहुँचा। घर में कोई नहीं था लेकिन मीमी बिल्ली अरुण, अमित के लिए रखे दूध को मजे से पी रही थी। उस रात उनकी मम्मी ने अरुण, अमित को काफी डाँटा कि उन्होंने

दूध क्यों नहीं पिया? उस दिन से अरुण, अमित ने मीमी बिल्ली को प्यार करना छोड़ दिया। मीमी बिल्ली को अपने किये पर काफी पछतावा हुआ, वह माफी मांगने को तैयार थी। उसने अपना दुःखड़ा जम्पी कुत्ते को सुनाया। जम्पी ने समझाया जो भी तुम्हें चाहिये मांगकर खाओ, चोरी करना बुरी आदत है। अब मेघा, सरस को देख। स्कूल से आकर वो मुझे बहुत प्यार करते हैं।

मेघा, अरुण ने उन्हें बताया कि गलती किससे नहीं होती? मीमी बिल्ली को माफ कर दो, वह भी हमारे लिये 'फील्डिंग' करेगी। ऐसा समझाने पर अब अरुण, अमित, मेघा, सरस सब बच्चे गेंद खेलते हैं तो जम्पी और मीमी 'फील्डिंग करते हैं।

सी–II, सहयाद्रि,
प्लॉट–5, सैक्टर–12,
द्वारका, नई दिल्ली–110078

चाह गई चिन्ता मिटी,
मनुवाँ बेपरवाह्।
जिन को कछु न चाहिए
सोई साहंसाह।।

(कबीर वचनावली)

सूक्तियाँ

प्रस्तुति – सुमन कुमार

1. **जीवनः–**

   लक्ष्यहीन जीवन केवल दयनीय ही नहीं होता, वह समाज के लिए हानिकारक भी होता है।

   – हजारी प्रसाद द्विवेदी

2. मुझे यदि कोई पूछे कि जीवन किसे कहते हैं, तो मैं उसकी व्याख्या करूँगा – संस्कार संचय।

   – आचार्य विनोबा भावे

3. **संस्कारः–**

   संस्कारों का संचय ही जीवन है। हमारा प्रत्येक कार्य एक छेनी का रूप बनकर हमारे जीवन रूपी पत्थर को निरंतर गढ़ता रहता है।

   – आचार्य विनोबा भावे

4. **चरित्रः–**

   मनुष्य के चरित्र की पहचान न केवल उसकी संगति से बल्कि उसकी बातचीत से भी हो जाती है।

   – जेम्स शरमन

5. **ईश्वरः–**

   ईश्वर न तो ऊपर स्वर्ग में हैं, न नीचे किसी पाताल में वह तो हर एक के हृदय में विराजमान है।

   – महात्मा गाँधी

6. **आलस्यः–**

आलस्य सुखरूप प्रतीत होता है, किन्तु उसका अंत दुख है, तथा कार्यदक्षता दुखरूप प्रतीत होती है, परन्तु उसमें सुख का उदय होता है।

– वेदव्यास

7. **स्त्रीः–**

स्त्री जो एक मूर्तिमान बलिदान है, जब वह सच्ची भावना से किसी काम का बीड़ा उठाती है तो पहाड़ों को भी हिला देती है

– महात्मा गाँधी

8. **त्रुटिः–**

त्रुटियों के संशोधन का नाम ही उन्नति है।

– लाला लाजपतराय

9. राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है।

– अवनींद्र कुमार विद्यालकार

10. राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी ही जोड़ सकती है।

– बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

11. विचार स्पष्ट हो, लक्ष्य ईमानदार हो और प्रयास संवैधानिक हों तो सफलता अवश्य मिलेगी।

– लोकमान्य तिलक

वरिष्ठ सहायक
हिन्दी विभाग

रुदन–मानवता का सुनामी–पहाड़ की

– सत्य प्रसाद उपरेती

किया अलग अलकनन्दा ने
भगाया बहुत भागीरथी ने
मन्दाकिनी भी लगी गर्जने
बरस बरस कर वर्षा अबके।

फट गये बादल तटबन्ध टूटे
फूटी झीलें अम्बार लाशों के
खड़े हैं केदारनाथ अकेले
आकाश में उड़ रही हैं चीलें।

यात्राकाल उत्सव और मेले
सन्नाटा पसरा पड़े हैं झोले
अविरल वर्षा टूटी हैं सड़के
घनघोर अन्धेरा बादल हैं छाये।

लाचार सुरक्षा खड़ी है किनारे
बचाव व राहत सम्भव हो कैसे
दुर्दशा हर तरफ पड़े हैं जीवन के लाले।
न सूझता कुछ भी कैसे ये अन्धेरे

दम तोड़ते बच्चे–बूढ़े अपनों के आगे
बिछड़ते स्वजनों का चीत्कार सुनें कैसे।
प्रलय मची है केदारनाथ से
रामबाड़–गौरी कुण्ड तक मानव बहते।
डूबी बस्तियाँ गाँव नगर खत्म हो गये।
भरी सिसकियाँ दर्शक पहाड़ियों ने
रो रही मानवता प्रकृति–दानव के आगे
बना दी बंजर बस्तियाँ उजाड़े सभी रास्ते।
सन् 2013 त्रासदी यात्रा–काल ने
सुनामी बनकर नगर–गाँव उजाड़े
बेरहमी से बरबादी की चादर लपेटे
पानी प्रलय बाढ़ सुनामी और आँसू बहाये।
शेष मृतप्रायः अधमरे जीवन से
अन्तिम साँस लेने की प्रतीक्षा में
निहारता यहाँ–वहाँ बेचारगी से
सोचा मेरे अन्त का कारण छिपा मेरे में।
बड़ी–बेरहमी से मैंने पहाड़ के पेड़ काटे
बड़े बड़े बाँध जगह–जगह बजाये
सारे पहाड़ को हिला दिया कारतूसों से
आँसू ही आँसू भर दिये उसकी गोद में।
प्रतिफल उसी का आज ये
मिल रहा है यूँ मुझे
बस लौटाकर सौगात उसने
फूट–फूट कर रूला दिया मुझे।

सेवानिवृत्त प्रवक्ता
नगरपालिका परिषद, नई दिल्ली
एफ–24, सेक्टर–12,
नोएडा–201301

दयानन्द सागर (महाकाव्य)

–पुस्तक समीक्षा

–मूलचन्द गुप्त

वैदिक संस्कृति के अति आस्थावान हिन्दी कवियों ने अपने आचार्य तथा युगपुरूष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के महनीय चरित्र तथा विराट् व्यक्तित्व को लेकर अनेक उत्कृष्ट महाकाव्यों की रचना की है। निश्चय ही महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व ब्रहमचर्य, मानसिक, आत्मिक और शारीरिक बल से लोक मंगल की सिद्धि को जीवन का लक्ष्य बना कर मृत्युपर्यन्त स्वदेश की भलाई, जनसेवा तथा मानव–उत्थान के लिए कार्य किया। महर्षि दयानन्द निश्चय ही धर्म वीर, सत्य वीर तथा त्याग वीर थे।

अपनी किशोरावस्था से काव्य–सृजन करते आ रहे श्री भगवान दास हिन्दी के अनन्य उपासक एवं योजक रहे हैं। उन्होंने नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् की मुख–पत्रिका "पलिका समाचार" (मासिक) का वर्षों पर्यन्त सम्पादन किया है। आप द्वारा रचित "मन्त्रगीत" (वेद–मन्त्रों का काव्यनुवाद) तथा "गितिका" (श्रीमद्भागवत गीता का काव्यानुवाद) को समाज में समुचित सम्मान प्राप्त हुआ।

आपने "दयानन्द सागर" महाकाव्य की रचना कर तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक

परिस्थितियों का यथा तथ्य चित्रण कर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन की प्रमुख, घटनाओं को काव्यबद्ध किया है। ''दयानन्द सागर'' चार काण्डों में विभक्त है। ''वैराग्य'' शीर्षक प्रथम काण्ड़ में स्वामी दयानन्द के जन्म से लेकर मथुरा में स्वामी विरजानन्द की पाठशाला में अध्ययन की समाप्ति एवं गुरू दक्षिणा तक की घटनाओं का उल्लेख किया है। काव्य का आरम्भ स्वामी दयानन्द के आविर्भाव काल की परिस्थितियों को लिपिबद्ध करने से होता है, यथा–

थी और निशा, पथ भी बीहड़, थे वृक्ष कंटीले पग–पग पर।
हिंसक पशु बटमारों का डर, कहीं सर्प–बिच्छु सर कें भू पर।।
ऐसी हि दशा थी भारत की, जब दयानन्द जन्में भू पर।
था अन्धकार–अज्ञान, वेद को भुला चुका था भारत भर।
बहु–विवाह, बालकों की शादी, विधवाओं के दुखड़े चहुँदिशि।
नारी को बना गुलाम उन्हें, परदें में रखने के स्वर थे।।

शिवरात्रि की प्रसिद्ध घटनाचक्र का वर्णन कवि निम्न प्रकार करता हैः–

हो गया चकित, देखा चूहे, शिव पिण्डी पर चढ़ जाते हैं।
पिण्डी पर पूजित फल, मोदक, वे बड़े चाव से खाते हैं।
शंका उमरी–शिव–कथा मध्य, शिवजी तो त्रिशुल धारी हैं।
कैलाश शिखर पर अध्विासित, डमरू का वाद्य बजाते हैं।
दिल में ठिठकी शंकाओं का, कर रहा प्रकट न मूलशंकर।
क्या यही मूर्ति, हे पूज्य पिता, हे तव–वर्णित सच्चा शंकर।।

स्वामी विरजानन्द की पाठशाला में अध्ययन की समाप्ति एवं गुरू दक्षिणा का उल्लेख करते हुए कवि ने धर्म के नाम पर किये जाने वाले पाखण्ड़, ढ़ोंग व आड़म्बरों का यथार्थ चित्र उपस्थित किया है–

यहाँ आर्फ रीति सब हुई लुप्त, इस का उद्धार करो प्रियवर ।
पाखण्ड, ढ़ोंग, आडम्बर के, यहाँ फैले हैं दुष्कर तरूवर।।
उद्धार करो मानवता का, दे यही दक्षिणा तू मुझको।
ना मुझे चाहिए धन–दौलत, तू यही पिपासा पूरी कर ।।
द्धषिवर बोले–हे गुरूदेव ! तव मुख–निःस्रत हर एक वचन।
यह शिष्य तुम्हारा आभारी, कर देगा निश्चय ही पालन।।

दयानन्द सागर का द्वितीय काण्ड ''गंगा शीर्षक है''। इसमें कवि ने महर्षि दयानन्द का कर्म क्षेत्र में अवतरण से लेकर मुम्बई आगमन तक के इतिवृत का चित्रण किया है। एव कर्णसिंह द्वारा ऋषि द्वारा तलवार छीन कर उसके टुकड़े करने की घटना का कवि ने सजीव वर्णन किया है–

खो बैठे आपा रावकर्ण, अपशब्द–अग्नि का किया वार।
कर खड़ग हस्त लष के ऋषि पर बढ़ गया तीव्र तलवार ज्वार ।।
ऋषिवर ललकारे–अरे धूर्त! कह दिया ढकेल धर तल पर ।
फिर उठा संभल, ऋषि के ऊपर, करने वाला ही था प्रहार।।
कर खडग हस्त, कर दिया पस्त, कर के निरस्त्रपटका भू पर।
पुनि पकड़ मूठ, बल दे अटूट कर दिये टूक, फेंका खंजर।।
ऋषि पकड़ हाथ बोले उससे, क्या कर प्रहार ले लूं बदला ।
हूँ सन्यासी ना करूँ वार, तुझसे दावन से मैं चिढ़कर।।

दयानन्द सागर के तृतीय काण्ड़ में कवि ने मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना से लेकर राजस्थान गमन तक का चित्रण किया है। कवि ने इस काण्ड से ''संगठन'' का शीर्षक प्रदान किया है। दयानन्द की वेदना को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

हो सकता हृदय–विदाकर दुख, भाई ! इससे भी कुछ बढ़कर ?,
दुखभरी आह विद्यवाओं की, निर्धन – अनाथ के आर्त स्वर।।

हो रही निरन्तर गौ–हत्या, जकड़ा है देश गुलामी में।
लड़ रहे परस्पर भारत–जन, चहुँ दिशि फैले हैं, आड़म्बर ।।

''राजस्थान'' शीर्षक अन्तिम काण्ड; में राजस्थान आगमन से लेकर अजमेर में स्वामी दयानन्द के परलोक–गमन तक का इतिहास काव्यबद्ध किया है। महान् क्षमाशील स्वामी दयानन्द ने अपने विषदाता को क्षमा तो किया ही, उसे स्वयं ही धन की थैली देकर कहीं दूर चले जाने का निर्देश भी दिया, ताकि वह दण्ड़भागी न बन सके। इस प्रसंग का चित्रण करने वाली कवि की निम्न पक्तियां अत्यंत मार्मिक बन गई है–

कर दयाभाव बोले स्वामी– 'हे जगन्नाथ मेरे प्रियवर।
मरने से मेरे सभी काम, रह गये अधूरे और अधर।।
ना तुम्हें पता मम मृत्यु से, पर हित की कितनी हुई हानि ।
ना इसमें दोष तुम्हारा कुछ, सब लीला करी उसी ईश्वर।।
ले लो यह जगन्नाथ कुछ धन, कर रहा तुम्ही को मैं अर्पण।
तज दो राठौर–राज्य सीमा, नेपाल राज्य में करो रमण।।
हो जायेगा तब प्राण–त्राण, आगयी गन्ध भी राजा को।
ना बचो कोप से तुम उनके, वह प्राण तुम्हारे करे हरण ।।

उपर्युक्त पंक्तियों में हमने 'दयानन्द सागर' महाकाव्य में वर्णित प्रसंगों की खण्ड क्रम से एक झलक मात्र देखने का प्रयत्न किया है। समग्र काव्य का अध्ययन करने से पाठक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कवि ने महर्षि दयानन्द के महनीय जीवन प्रसंग को अत्यन्त उदात्त एवं परिष्कृत शैली में प्रस्तुत करने का श्लाघनीय प्रयास किया है।

कुसुमालय, बी–1/27, रघुनगर, पंखारोड़, नई दिल्ली–110045

बट हू विल टेक केयर?

–प्रेम नारायण गुप्ता

पापा बहुत खुश थे कि उनका बेटा विदेश में अच्छी तरह से सैटल हो गया था। बेटे ने वहीं एक विदेशी युवती से शादी कर ली और उनके दो बच्चे भी हो गए। अब तो उसने अपना एक अच्छा सा मकान भी ले लिया है और बच्चों के साथ मज़े से वहीं रह रहा है। पापा और मम्मी अब काफ़ी बूढ़े हो गए हैं और अक्सर बीमार रहते हैं। पेंशन के जिन रुपयों से गृहस्थी चल जाती थी अब वो कम पड़ने लगी हैं क्योंकि मँहगाई, दवाएँ, और फलों का खर्च बजट बिगाड़कर रख देता है।

माँ ने बार–बार फोन करके बेटे को घर आने के लिए कहा क्योंकि पापा बहुत बीमार चल रहे थे। बेटा किसी तरह समय निकालकर पिताजी की बीमारी का हाल–चाल जानने चला आया। माँ–पिताजी बेटे को देखकर बहुत खुश हुए और बहू और पोते–पोती को साथ न लाने पर नाराज़ भी हुए। आज बरसों बाद रसोई में कई चीज़ें एक साथ बनी और बेटे को खूब खिलाया–पिलाया।

बेटे ने पिताजी से पूछा, ''अब तो इंडिया में भी प्रॉपर्टी के दाम बहुत बढ़ गए हैं। अपना मकान कितने का चल रहा है?'' ये सुनकर पिताजी को अच्छा नहीं लगा और वो सुना–अनसुना कर गए। बेटे का अगले दिन ही वापस लौटने का कार्यक्रम था। जाते हुए बेटा इतना ही बोल पाया, ''टेक केयर पापा।'' यह सुनकर मम्मी की आँखों में आँसू भर आए और वे मन में सोचती ही रह गई, ''बट हू विल टेक केयर?''

प्रश्न उठता है कि क्या मात्र टेक केयर कहने से ही माता–पिता की देखभाल हो जाती है? बुढ़ापे में पैसों की ही नहीं सेवा की भी ज़रूरत पड़ती है। कुछ लोगों की मजबूरी हो सकती है जिसके कारण वे अपने माता–पिता के पास नहीं रह सकते अथवा उन्हें साथ नहीं रख सकते लेकिन माता–पिता को तो उनकी ज़रूरत है। क्या बचपन

में माता–पिता किसी विवशता के कारण अपने बच्चों को अपने से कभी दूर होने देते हैं?

प्रायः सभी माता–पिता बच्चों के लिए हर प्रकार के समझौते करने को तैयार रहते हैं फिर उनके बुढ़ापे में बच्चे क्यों नहीं कोई समझौता करने का प्रयास करते कुछ लोग अपने बूढ़े माता–पिता की सेवा तो नहीं कर पाते लेकिन उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक तंगी नहीं होने देते। ऐसे लोग उन लोगों से बेहतर है जिनके माता–पिता दाने–दाने को मोहताज हो जाते हैं लेकिन माता–पिता की सेवा करना भी तो बच्चों का ही फर्ज़ है। हम सब अपने फर्ज़ से कैसे मुँह मोड़ सकते हैं?

आज के आधुनिक शिक्षा प्राप्त तथा पाश्चात्य संस्कृति के पुजारी वैसे तो अपने बूढ़े माता–पिता को कभी पूछते नहीं लेकिन मदर्स डे और फादर्स डे पर उपहार भिजवाना नहीं भूलते। बूढ़े माता–पिता को मंहगे उपहार नहीं देखभाल और प्यार की ज्यादा जरूरत है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि उन्हें देखभाल की भी कोई ख़ास जरूरत नहीं है। वास्तव में उन्हें जरूरत है अपने बच्चों के साथ की। बहू और पोते–पोतियों के साथ की। यदि उनकी बहू और पोते–पोतियाँ साथ होंगे तो उन्हें देखभाल की भी कोई जरूरत नहीं होगी अपितु वे ही उनके कामों में हाथ बंटा देंगे। परिवार का अभाव ही तो उनके दुख और बीमारी का कारण है।

एकल परिवारों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों में रहने वाले माता–पिता और बच्चें सभी अधिक स्वस्थ रहते हैं। साथ रहना सुरक्षा ही नहीं अच्छे स्वास्थ्य का भी मूल है। कुछ लोग ऐसे भी है जो माता–पिता के साथ तो रहते है और उनका पर्याप्त आदर–सम्मान भी करते है।, उनके पैर छूते हैं लेकिन अपने बच्चों को उनके पास तक फटकने नहीं देते। मात्र दिखावे के लिए आदर–सम्मान भी पर्याप्त नहीं अपितु पूर्ण रूप से अपनेपन की जरूरत है।

दादा–दादी अपने पोते–पोतियों के साथ घुलमिल कर रहें तभी उन्हें अच्छा लगेगा। दोनों एक दूसरे के सहचर्य से परस्पर लाभान्वित भी हो सकेंगे। बच्चे थोड़े बड़े होंगे तो अपने दादा–दादी का काम करेंगे और छोटे होंगे तो उनसे अपना काम करवाएँगे जिससे दादा–दादी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। यदि सचमुच अपने बूढ़े माता–पिता को स्वस्थ रखना है, उनकी सेवा करनी है तो उनसे उनके पोते–पोतियों का संसार मत छीनिये।

ए.डी.–26–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन नं0 09582757202

टेढ़े जुकाम के सीधे इलाज

– वीणा गुप्ता

कहने को तो जुकाम एक साधारण–सी बीमारी है, पर ज़रा उस व्यक्ति के हाल–चाल पूछिये जो जुकाम से पीड़ित है, न बैठने पर चैन न लेटने पर आराम, किसी काम में लाख मन लगाओ पर मजाल है कि काम हो जाये, जुकाम से ग्रस्त व्यक्ति ही जाने पीर पराई, जुकाम के नाम पर यदि साहब से छुट्टी मांगो तो उसे यकीन नहीं आता कि जुकाम होने पर छुट्टी की ज़रूरत भी पड़ सकती है। वह इसे केवल कामचोरी समझता है, किसी बच्चे को जुकाम हो जाये तो उसके बार–बार मना करने पर भी उसे जबरदस्ती स्कूल भेजा जाता है। ऊपर से कहते हैं– "अरे जुकाम भी कोई बीमारी है?" मतलब यह कि जुकाम कहने–सुनने में बहुत साधारण सी बीमारी है, पर होती बहुत कष्टदायी है। यदि समय पर सावधानी न बरती जाये तो यह रोग अन्य रोगों का कारण बन जाता है।

जुकाम के कारणः

जुकाम का रोग अत्यन्त सूक्ष्म जीवाणु फैलाते हैं, ये जीवाणु नाक और गले की त्वचा की कोशिकाओं में सुप्तावस्था में रहते हैं, जब कभी इन्हें अनुकूल वातावरण व परिस्थितियां मिलती हैं, ये सक्रिय हो जाते

हैं और मनुष्य जुकाम से ग्रसित हो जाता है। प्रायः जुकाम होने पर कहा जाता है– सर्दी लग गई। परन्तु वास्तव में जुकाम का संबंध सर्दी लगने से नहीं होता। यह किसी भी ऋतु में हो सकता है। ऋतु–परिवर्तन का समय जुकाम के जीवाणुओं के सक्रिय होने का सबसे उत्तम समय है। अतः इस मौसम में जुकाम अधिक होता है।

गर्म–सर्द हो जाने पर भी जुकाम हो जाता है। गर्म पानी में स्नान करके बिना वस्त्र पहने ठण्डी हवा में आ जाने पर अथवा गर्मी के मौसम में धूप आदि में घूमने के बाद सीधे कूलर या एयरकंडीशनर द्वारा ठण्डे किये गये स्थान पर चले जाने से गर्म–सर्द हो जाती है। जुकाम के रोगी के संपर्क में आने पर भी इस रोग की छूत लग जाती है।

धूल वाले अथवा धुएँ वाले स्थान पर अधिक देर तक रहने पर भी जुकाम हो सकता है। दुःख में अथवा अत्यधिक रोने से भी यह रोग हो जाता है। आदत के विपरीत पेट की बीमारियों से भी जुकाम का सीधा संबंध रहता है। इसके अतिरिक्त धूम्रपान करने वाले व्यक्तियों को जुकाम शीघ्र होने की संभावना बनी रहती है।

जुकाम के लक्षणः

जुकाम होने पर नाक रूक जाती है व नाक से तरल पदार्थ बहने लगता है। कभी–कभी आँखों से भी पानी बहने लगता है। नाक और गले में सनसनाहट–सी होती है। सिर में दर्द होता है। गला बैठ जाता है। कई बार तो गले की आवाज़ तक रूक जाती है। इस बीमारी में छींक भी आने लगती हैं।

भयंकर रूपः

जुकाम का समय पर उपचार न करने से अनेक भयंकर परिणाम सामने आ सकते हैं, पसलियों में सूजन, सरसाम आदि रोग भी हो जाते हैं। यदि समय पर नियंत्रण न किया जाये तो यह आगे चलकर इन्फ्लूंजा, खांसी, निमोनिया और क्षय तक का रूप धारण कर लेता है। इस बीमारी के लगातार रहने से फेफड़ों पर व आँखों की रोशनी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। बाल आयु से पहले ही सफेद हो जाते हैं व स्मरण शक्ति कमज़ोर होने लगती है।

उपचार व सावधानियांः

उपचार से बेहतर है सुरक्षा। किसी रोग का इलाज करने से अच्छा है कि अपने को वह रोग विशेष होने ही न दिया जाये। जुकाम होने के सभी कारणों के प्रति हमें सावधान रहना चाहिये। थोड़ी–सी सावधानी रखने पर हम इस रोग से बच सकते हैं। हमें खुले हवादार स्थान पर रहना चाहिए, जुकाम के रोगी के संपर्क में आने वाली वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए। धुएँ व धूल वाले स्थान पर जाने से बचें तो ठीक हैं। धूम्रपान से यथासंभव बचना चाहिए। अनेक प्रकार की सावधानियां रखने पर भी यदि रोग लग ही जाये तो हमें सतर्क हो जाना चाहिए।

जुकाम के घरेलू इलाजः

जुकाम के कुछ घरेलू इलाज हैं, जिनके करने पर इस बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है।

– दिन में तीन–चार बार नमक मिले गुनगुने पानी से गरारे करने चाहिए। ऐसा करने से नमक के प्रभाव से गले में बढ़ने वाले जुकाम के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।

– भोजन बहुत हल्का व गर्म की करें, जल में नींबू निचोड़कर पीना भी अत्यंत लाभदायक रहता है।

– तुलसी के पत्तों की चाय से भी जुकाम में लाभ होता है।

– एक गिलास गर्म दूध में 10–12 काली मिर्च व चीनी के स्थान पर मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है।

– अदरक को शहद के साथ पीसकर खाना भी जुकाम को दूर भगाने में लाभकारी रहता है।

– गुलबनक्शे का काढ़ा पीने व उसकी उबली पत्तियों को गले पर बांधने से आराम मिलता है।

– अजवायन का काढ़ा पीने से भी यह रोग ठीक हो जाता है।

– लौंग को पीसकर तालू पर लगाने से लाभ होता है। लौंग को मुँह में रखने पर भी आराम मिलता है।

– इस प्रकार इन घरेलू इलाजों द्वारा मनुष्य काफी सीमा तक जुकाम के रोग पर नियंत्रण पा सकता है। यदि इन घरेलू इलाजों से कुछ लाभ न हो तो तुरंत ही डॉक्टर को दिखाना चाहिए। अधिक दिनों तक घरेलू दवाइयों के चक्कर में नहीं रहना चाहिए।

जुकाम–पीड़ित व्यक्ति के कुछ कर्त्तव्य

यदि कोई व्यक्ति जुकाम से पीड़ित है तो उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी छूत अन्य लोगों को न लगे। इसके लिए यह आवश्यकता है कि वह अपना रूमाल व तौलिया आदि घर के अन्य सदस्यों के वस्त्रों से अलग रखे। बिस्तर भी अलग होना चाहिए। उसे जगह–जगह थूकना या नाक साफ नहीं करना चाहिए। किसी ढक्कनदार पात्र में थूकना अच्छा होगा।

यदि बालक जुकाम से पीड़ित है तो उसके संरक्षक को इन कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए जिससे कि यह रोग दूसरे लोगों को न लगे।

554–ए, तलवण्डी,
कोटा–324005 (राज.)

कहानी

फूट डालने की सजा

– बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक जंगल में तीन शेर रहते थे। तीनों में गहरी दोस्ती कायम थी। तीनों जहाँ भी जाते, एक साथ जाते थे तथा तीनों एक साथ शिकार कर के उसे मिल बाँट कर खाते थे।

तीनों शेरों की दोस्ती में फूट डालने के लिए एक लोमड़ी काफी दिनों से तीनों के पीछे पड़ी हुई थी। मगर वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाई थी।

एक रोज एक शेर बीमार पड़ गया। बीमार हो जाने के कारण शेर अपने दोस्तों के साथ जंगल में शिकार करने नहीं जा पा रहा था।

मगर उसके दोनों दोस्त बीमार शेर की दवा दारू और भोजन की व्यवस्था में कोई कमी नहीं रखते थे।

एक रोज लोमड़ी ने सोचा कि अब तीनों शेरों के बीच फूट डालने का यह अच्छा मौका है, ऐसा सोच कर लोमड़ी बीमार शेर के पास पहुँच कर बोली "शेर भाई आज मैं तुम्हें एक सच्ची खबर देने आई हूँ, कहो तो मैं उसे सुनाऊ।"

"हां, सुनाओ तो सही कैसी खबर लेकर आई हो" लोमड़ी बोली शेर भाई जब से तुम बीमार पड़े हो। तब से तुम्हारे दोनों दोस्त तुम्हें हर दिन सड़ा गला

बासी मांस खाने को दे रहे हैं और दवा दारू भी ठीक से नहीं करा रहे हैं।

तुम्हारे दोनों दोस्तों को आज मैंने यह कहते सुना कि आज तुम्हें दवा में जहर मिलाकर खिलाने वाले हैं ताकि तुम मर जाओ और जंगल पर उन दोनों का राज हो जाए।

लोमड़ी झूठी बातें कह कर वहां से चली गई। तभी दोनो शेर अपने बीमार शेर दोस्त के लिए मांस और दवा ले कर वहां आ पहुँचे और बीमार शेर को मांस का टुकड़ा और दवा की पुड़िया दे कर बोले, "शेर भाई इसे खा कर आराम करो।"

दोनो शेरों की बातें सुनकर बीमार शेर बोला, मैंने सुना है कि तुम दोनो हमारे खाने के लिए सड़ा गला मांस लाते हो और आज दवा में जहर मिला कर लाए हो ताकि मैं जहर मिली दवा खाकर मर जाऊँ और तुम दोनों इस जंगल पर अपना राज कर सको।

नहीं, नहीं, ऐसा हम दोनों जीवन में नहीं सोच सकते हैं। मैं मांस ताजा लाया हूँ और दवा में जहर मिलाने की बात झूठी हैं।

हमारी दोस्ती में फूट डालने के लिए जरूर किसी ने यह चाल चली है। क्या मैं उस फूट डालने वाले का नाम जान सकता हूँ। दोनों शेर बीमार शेर दोस्त से पूछ पड़े।

बीमार शेर बोला यह बात हमें लोमड़ी ने बताई है। लोमड़ी का नाम सुन कर दोनों शेर लोमड़ी पर आग बबूला हो गए और फूट डालने की सजा देने पर विचार–विमर्श करने लगे।

अगले दिन लोमड़ी दोनो शेरों को रास्ते में मिल गई और बोल पड़ी, शेर भाईयों अब तुम दोनों को जान का खतरा बन गया है। तुम्हें पता है तुम्हारा दोस्त शेर जो बीमार है, वह तुम दोनों को जान से मारने की योजना बना रहा है। वह तुम दोनों को मरवा कर खुद जंगल का राजा बनना चाहता है। तुम दोनों अपने दोस्त से बच कर रहना।

इतना कहकर लोमड़ी अपने घर की ओर जाने लगी। तभी दोनों शेर बोल पड़े, "लोमड़ी बहन तुम हमारी दोस्त बन जाओ और आज से हर दिन बीमार शेर की योजनाओं के बारे में हमें सारी बातें बताती रहना, इसके बदले मैं तुम्हें अपने साथ शिकार पर ले जाऊँगा और ताजा–ताजा जानवरों का मांस खिलाऊँगा।"

"आज हम दोनों सामने के पहाड़ पर जा रहे हैं वहां हिरनों का झुंड घास चरने आता है। आज हम तुम्हें हिरन को मार कर उसका ताजा मांस खिलाएगें। चलोगी हमारे साथ।" दोनों शेर पूछ बैठे।

लोमड़ी दोनों शेरों के साथ पहाड़ पर चलने को तैयार हो गई। पहाड़ पर पहुँच कर दोनों शेरों ने लोमड़ी से कहा "लोमड़ी बहन इस पहाड़ पर कहीं हिरन नहीं नजर आ रहा है। तभी पहला शेर बोल उठा, "लोमड़ी बहन वह देखो पहाड़ की घाटी में कितने सुन्दर सुन्दर हिरन घूम रहे हैं चलो वहीं चलते हैं।"

तभी दूसरा शेर बोल पड़ा, "लोमड़ी बहन पहाड़ के रास्ते घूम कर जाने पर बहुत समय लगेगा इसलिए हम पहाड़ से कूद कर घाटी में जल्दी पहुँच जाएंगे।"

"पहले तुम कूदो फिर हम दोनों एक साथ कूद कर घाटी में पहुँच जाएंगे।" लोमड़ी ने दोनों शेरों की बातों में आ कर पहाड़ से घाटी में छलांग लगा दी। घाटी में गिरते ही लोमड़ी के प्राण निकल गए।

तीनों शेरों के बीच फूट डालने की सजा देकर दोनों शेर बहुत खुश हुए। बीमार शेर को जब दोनों शेरों ने लोमड़ी के मरने की खबर सुनाई तो बीमार शेर भी खुशी से हंस पड़ा।

अध्यक्ष– स्व० मीनू रेडियो, श्रोता क्लब,
गल्लामंडी, गोला बाजार–273408
गोरखपुर (उ०प्र०) भारत

वरिष्ठों के लिए – दोहे

– बाबूराम शर्मा विभाकर

शिक्षा–दीक्षा का वरण, चमके जीवन–रूप,
धारण सामंजस्य का, खिले सुखों की धूप।
छटे तिमिर अज्ञान का, प्रतिपल सेवो ज्ञान,
लगन साधना को लिए, ज्ञान बने विज्ञान।
वृद्धापन में भी रहे, बालकपन का रूप,
फिर देखो आनंद की, छिटका करती धूप।
अपने ज्ञान–विवेक से, दो सुन्दर वह सोच,
अनुभव अपना दीजिए, वाणी में हो लोच।
अच्छी सच्ची बात का, अनुमोदन हो खूब,
बेसुर यदि तू बोलता, भोंडा बने स्वरूप।
निज के अनुभव–ज्ञान से, वृद्धापन मुसकाय,
नव पीढ़ी शिक्षित बने, उपकृत हो–हो जाय।
मन से बूढा जो नहीं, तन से भी क्या होय,
मन से जो बुढ़िया गया, तन की रंगत खोय।
तन के सुख का अर्थ क्या, मन से याद बीमार,
तन से, मन से स्वस्थ हो, यही स्वास्थ्य का सार।
जब तक घट में प्राण हैं, रहे कर्म में लीन,
सभी इन्द्रियाँ यशवती, कभी न होवें दीन।
खान–पान व्यवहार का, हो वह सुन्दर रूप,
संयम–शिष्टाचार से, जीवन उजले खूब।
वृद्धापन बोझा नहीं, चिंताएँ दो छोड़, बहुत
सरल ही मार्ग पर, जीवन–रथ लो मोड़।
माता, पिता और गुरु विज्ञ सब, हुए ज्योति–अनुरूप,
इन्हें पितर ही मानिये, जो दिग्दर्शक रूप।

**52/2, लाल क्वाटर्स
गाजियाबाद–201001**

कहानी

बचत बहुत काम की

– ऋषि मोहन श्रीवास्तव

सामान्यतः किसी खर्चीले व्यक्ति से आप कहो कि वह मितव्ययी बने तो उसे बुरा लगेगा–वह कहेगा–मैं क्यों बचत करूँ। ईश्वर ने मुझे धन दिया है, सो मैं खर्च कर रहा हूँ। जिसके पास धन नहीं, वह साधारण तौर पर रोजाना कमाता है और रोजाना खर्च करता है। उसे भी बचत की परवाह नहीं होती। लेकिन यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि 'बचत' करने से व्यक्ति के समक्ष परेशानियों का हल आसानी से निकल आता है। बचत के कारण उसे हर किसी के आगे हाथ भी नहीं पसारना पड़ता।

व्यक्ति यदि रोजाना सौ रुपए कमाता है, तो उसे अपनी आमदनी का दस प्रतिशत जरूर बचाना चाहिए। यह दस प्रतिशत उसके व उसके परिवार के सदस्यों के कभी भी काम आ सकते हैं।

चींटी बचत के लिए अच्छा उदाहरण है। चींटी अपने रोजाना के लिए तो खाद्य–पदार्थो का संग्रह करती ही है। लेकिन वह भविष्य के लिए भी एक जगह खाद्य पदार्थो को एकत्रित करती है। वह सोचती है कि बरसात के दिनों में निकलना कठिन होगा। क्यों

न बरसात के लिए खाद्य–पदार्थ एकत्रित कर लिए जाएं।

एक किसान की कुछ कारण–वश एक बार की फसल कुछ कम हुई। पूरे वर्ष–भर अन्न कैसे चलेगा। क्योंकि इस बार तो सिर्फ ग्यारह महीने के लिए ही अन्न पैदा हुआ था। यह चिन्ता किसान के मन में थी। वह समस्या का निराकरण कैसे करे और एक महीने का राशन कैसे जुटाए?

किसान की एक पुत्र वधू थी। उसने किसान को चिन्तित देखकर पूछा "पिताजी, क्या बात है?" किसान ने पुत्रवधू को चिन्ता का कारण बता दिया। पुत्रवधू बोली– "पिताजी, आप बिल्कुल चिन्ता न करें। एक महीने के राशन की व्यवस्था हो जाएगी।"

पुत्रवधू अपनी बात पर एकदम सटीक निकली। पूरे सालभर राशन चल गया। किसान सोचने लगा बहू ने बारहवें महीने का राशन–खर्च कैसे चलाया?

एक दिन उसने पुत्रवधू से पूछ लिया– बहू, तुमने बारहवें महीने का राशन–खर्च कैसे चलाया? मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है।"

बहू बोली, "पिताजी, राशन तो वास्तव में ग्यारह महीने के लिए ही था, लेकिन जिस दिन आपने मुझे अपनी चिन्ता का कारण बतलाया, उसी दिन से मैं रसोई के लिए जो अनाज निकालती थी उसी में से एक–दो मुट्‌ठी अनाज रोजाना वापस उसी अनाज की कोठी में डाल देती थी। इस तरह बारहवें महीने के लिए भी अनाज इकट्‌ठा हो गया। किसान, पुत्रवधू की बात सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसे बहू का गृह–प्रबंधन बहुत अच्छा लगा। सच है बचत से कभी–कभी बड़े काम हो जाते हैं।

एस–1, नित्यानंद विला,
कमलेश्वर कॉलोनी
जीवाजीगंज लश्कर,
ग्वालियर–474001 (म०प्र०)

वास्तविकता–व्यक्तित्व की पहचान

– ऋषि मोहन श्रीवास्तव

आज व्यक्ति की सोच वास्तविकता से एकदम परे होती जा रही है। व्यक्ति कल्पनाओं में उड़ना चाहता है। बहुत जल्दी वह वैभव जुटा लेना चाहता है, जिससे वह अपनी व अपने परिवार की जिंदगी को खुशहाल व समृद्ध बनाना चाहता है। आज व्यक्ति अपने मानवीय व नैतिक मूल्यों से दूर किसी भी प्रकार के अनैतिक कार्य को भी इतनी सरलता से करने लग जाता है कि जैसे, उसमें कोई इंसानियत कभी रही ही नहीं।

आज चापलूसी व मक्खनबाजी करके व्यक्ति ऊँचे से ऊँचा पद पाना चाहता है। ऊँचे से ऊँचा पुरस्कार पाना चाहता है। आज ऐसे लेखक, साहित्यकार, कवि, रचनाकार बहुत ही सीमित हैं जिन्होंने अपनी वास्तविक क्षमताओं और काबलियत के आधार पर कोई पुरस्कार प्राप्त किया हो। इनमें अन्य क्षेत्र के लोग भी शामिल हैं।

आप किसी भी क्षेत्र की बात करिये। ऐसे लोगों की संख्या भी हमारे यहाँ सीमित है, जो अपनी प्रतिभा के बल पर बुलंदियां छूते रहे हैं उन्हें किसी के सहारे

या बैशाखियों की आवश्यकता नहीं पड़ी।

आज ऐसे लोगों की बड़ी भारी जमात है जो दूसरों का सहारा लेकर आगे बढ़े हैं और बढ़ने के बाद अपनी प्रतिभा के झूठे पुल बांधते रहे हैं। ऐसे लोगों को सिर्फ चाटुकार व चापलूस ही कहा जा सकता है।

हमें अपनी वास्तविक क्षमताओं को पहचान कर ही आगे बढ़ना चाहिए। तभी हमारी वास्तविक प्रतिभा का सही आकलन हो सकता है। कुछ लोग हमेशा ही सामर्थ्यवान व्यक्ति का पल्ला पकड़े रहते हैं–उसी से हर बात के लिए अपेक्षाएं रखते हैं। उनके प्रयासों से उन्हें आगे बढ़ने का अवसर मिलता है।

कुछ क्रांतिकारी, राजनीतिक नेताओं, अफसरों और सामान्य व्यक्तियों ने स्वयं की प्रतिभा के बल पर अच्छी–खासी क्षमताएं अर्जित कीं। वे दूसरों के काम भी आए। उन्होंने वास्तविक रूप से लोकप्रियता अर्जित की। इनमें अनेक कवि, साहित्यकार, लेखक, व्यवसायी, वकील आदि भी हुए हैं। जो व्यक्ति स्वयं की क्षमताओं के बल पर सफलताएं प्राप्त कर, ऊँचाईयों के सोपान छूता है, वह वास्तविक प्रतिभाशाली है।

आप जान सकते हैं, आज हर क्षेत्र में अपवाद भी हैं। कुछ लोगों ने देश समाज को काफी कुछ दिया है। लेकिन कुछ लोग आपको ऐसे भी मिल जायेंगे, जिन्हें समय पर चाय–नाश्ता चाहिए, समय पर खाना चाहिए और बस। हाथ में हाथ रखे बैठे रहेंगे, या ज्यादा कुछ हुआ तो चादर ओढ़कर सोने में ही समय व्यतीत कर देंगे।

ऐसे लोगों से भला क्या अपेक्षा की जा सकती है कि वे देश और समाज को अपना योगदान देंगे। यही काफी है कि वे अपना और अपने परिवार का पालन–पोषण ही कर पाएं।

एस–1, नित्यानंद विला,
कमलेश्वर कॉलोनी, जीवाजीगंज लश्कर,
ग्वालियर–474001 (म०प्र०)

तीन कवितायें

आत्म बोध

–नवल जायसवाल

बूझने आये थे स्वयं को बुझा गये,
दो बूंद गंगाजल पी और हिरा गये ।
धर्मयुग का सा सार था उनका,
जाने से पहले सब कुछ जता गये।
यहाँ आने से लेकर वहाँ जाने तक,
कर्मों को अपने होम बना गये।
अनुरोध था उनसे कुछ पाने का,
सदा के लिए ज्वाला जला गये।
भूलों की क्षमा माँग लिया करते थे
प्रायश्चित की महिमा सुना गये
उन्हें भी इल्म था यहाँ से जाने का,
शहीदी की मशाल उगा गये।
इस कथा में मैं भी शामिल हूँ,
नवल को आदमी बना गये।

"माँ से मैं"

आज मैंने
नई पीढ़ी वाली
नई माँ के दर्शन कि
माँम का नन्हा सन
हँसता हुआ
इधर उधर भाग रहा था
बड़े हाल में
और माँ
हाथ में दूध की बोतल लिए
दौड़ रही थी उसके पीछे
दूध पिलाने के लिए,
कल भी मैंने
एक भारतीय माँ के दर्शन किए थे
माँ का आँचल उघड़ा पड़ा था
वह चेतना हीन सी थी
बेटा भूखा था
बिलख रहा था
दूध पीना चाहता था
दूध कहाँ से आये,

वह मेरी माँ थी
1947 से पहले की माँ
आज भी मिल जाती है।।

मेरे गाँव की चिन्हारी

रात भर सपनों में
परत दर परत अतीत की
वे अदृश्य कल्पनाएँ
स्वांग भरकर
आकार लेती रहीं
पटल पर अपने के लिए
सुबह कुछ भी याद नहीं आया,
स्मृतियों का मैदान
गाँव की ओर बढ़ते हुए
ढूँढ रहा था एक अदद, एक कुआँ
पानी से लबालब
कल तक तो सब ठीक था
आज कुएँ के कगार की बाल्टी
सूखे कुएँ का ग्रास बन गई,
आजकल मैं
अपने गाँव की चिन्हारी
मेरा वंश परिचय
बताने से डरता हूँ
क्योंकि मेरे गाँव का एक मात्र जीवन
कुएँ का अस्तित्व खतरे में है
बड़ के पेड़ के पास का,
मेरा वो गाँव तुम्हें, अब
कथा–कहानियों में मिला करेगा
और वह भी जब
मैं अपनी आत्म कथा लिखूँगा
गाँव की गोरी के गीतों के साथ
भरी गागर घर ले जाती हुई
पगडंडी पर अलता वाले पांव रखती,
गाँव पर फिल्म बनाते समय
कहानी में अपना नाम डाल दोगे
तुम तपाक से कह भी दोगे
यह तुम्हारी कहानी नहीं
मेरी कहानी है मेरे गाँव में भी एक कुआँ था
बड़ के पास।

प्रेमन बी–201, सर्वधर्म, कोलार रोड,
भोपाल–462042

उद्गार अजन्मी कन्या के

– प्रदीप बहुगुणा

माता मुझको कोख में रखकर
तूने किया कोई पाप नहीं,
मुझको भी वरदान समझ लो,
मैं कोई अभिशाप नहीं।

मेरी भी हसरत थी माता, कोख में तेरी मचलती मैं
बाबुल तेरी उँगली पकड़कर, अंगना में तैर चलती मैं
आती जब भी दीप दीवाली, आंगन दीप जलाती मैं
होली के दिन ले पिचकारी, रंग गुलाल उड़ाती मैं
राखी के दिन भाई कलाई, राखी बांध सजाती मैं
बजती एक दिन फिर शहनाई, छोड़ तेरा दर जाती मैं
तेरे घर की लाज को बाबुल, उस घर में भी निभाती मैं
बाबुल मुझको कोख ही में क्यों, मौत की नींद सुलाई रे
ना डोली ना दूल्हा बाराती, कैसी रीति बिताई रे

तो कन्या जन्म पर अब बंधु
कोई करे सतांप नहीं
इनको भी वरदान समझ लो
ये कोई अभिशाप नहीं।

लघु–कथा

वो दरगाह पर बेशकीमती चादर चढ़ाकर बाहर निकले कि सामने भीड़ देखकर वो भी उधर हो लिये– "क्या हुआ?"

"कड़ाके की सर्दी से एक और फकीर जाता रहा" किसी ने बताया।

"या अल्लाह! रहम कर"

फकीर की मौत का सारा दर्द अपने चेहरे पर समेट कर वो अपनी लम्बी सी गाड़ी की तरफ चल दिए।

बलदेव नगर–II
माकड़वाली रोड, अजमेर

प्रकृति की रूपराशि – भेड़ाघाट

– माला गुप्ता

मध्यप्रदेश के जबलपुर में नर्मदा की गोद में बसा है "भेड़ाघाट"। संगमरमर के पत्थरों के बीच बलखाती हुई नर्मदा यहीं जलप्रपात की शक्ल लेती है। "धुंआधार" के नाम से प्रसिद्ध यह जगह सिर्फ प्राकृतिक सुषमा के लिए ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कारणों से भी प्रसिद्ध है।

इस प्रपात के दोनों किनारे पर्वत श्रृंखलाओं से घिरे हैं। 105 फीट की उँचाई से जब नर्मदा नीचे छलांग लगाती है तो ऐसा लगता है जैसे कुहासे का तेज प्रवाह नजर के सामने से गुजर रहा है। संभवतः इसीलिए इसे धुंआधार का नाम दिया गया।

प्रकृति की इस रूपराशि के खजाने से मालामाल होने की कामना हो तो आपको न्याग्रा के जलप्रपात या कोलोरेडो के तट पर जाने की जरूरत नहीं, यहीं जबलपुर के भेड़ाघाट में वह अपने सौंदर्य से रूबरू कराने को तैयार मिलेगी।

जबलपुर शहर से 29 किलोमीटर की दूरी पर बसे भेड़ाघाट की स्थिति मानचित्र पर 23º8 अक्षांश और 78º48 देशांतर है। भेड़ाघाट में संगमरमर की चट्टानों के आईने में नर्मदा के सौंदर्य को देखकर कैप्टन फोरसिध इतने अभिभूत हुए कि उसे पूरी दुनिया में अतुलनीय बताया। इसकी चर्चा उन्होंने अपनी पुस्तक "आई लैंड्स आफ सैंट्रल इंडिया" में भी की है। उनके अनुसार प्रकृति की ऐसी सुंदरता उनकी नजर में दोबारा नहीं गुजरी।

भेड़ाघाट के बारे में कई किवदंतिया प्रचलित है। एक के अनुसार भेड़ाघाट का नाम प्राचीन ऋषि भृगु के नाम से पड़ा, जो इसी जगह पर नर्मदा के किनारे रहा करते थे। एक ऐसी भी अवधारणा है कि यह नाम "भेड़ा" शब्द से पैदा हुआ है।

भेड़ा का अर्थ होता है "मिलन स्थल"। नर्मदा और पावनगंगा की धाराओं का मिलन स्थल होने के कारण इसका नाम भेड़ाघाट पड़ा। कुछ विद्वानों की राय में भेड़ाघाट वस्तुतः भैरवीघाट का आधुनिक नाम है। क्योंकि इस बात के प्रमाण मिले हैं कि यह स्थल कभी शक्ति धर्म के आराधकों का प्रसिद्ध उपासना स्थल था। पुरातत्व शास्त्रियों ने भी इस बात की पुष्टि उपासना स्थल था। पुरातत्व शास्त्रियों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि भेड़ाघाट प्राचीन काल में शक्ति धर्म का केन्द्र था।

नर्मदा के दोनों तरफ संगमरमर की चट्टानें इतनी आसपास हैं कि उछलने वाले जीवजन्तु एक किनारे से दूसरे किनारे आसानी से छलांग लगा सकते हैं। शायद यही कारण है कि स्थानीय लोगों ने इस जगह को "बंदरकुदनी" नाम दिया है। इसके नाम से भी कई लोककथायें हैं। ऐसा कहा जाता है कि हनुमान ने लंका जाते समय नर्मदा को भी पार किया था। एक दूसरी कथा के मुताबिक संगमरमर की चट्टानों

के बीच संकरा रास्ता देवराज इन्द्र ने नर्मदा के लिए बनवाया था। बंदरकुदनी के साथ एक अभागी बंदरिया की कथा भी जुड़ी है, जिसने नर्मदा पार करने के प्रयास में अपने प्राण गवाए थे। अगले जन्म में वह काशी नरेश के घर पैदा हुई। उसका धड़ इंसान का था, पर सिर बंदरिया का था, क्योंकि पूर्व जन्म में मरने के बाद बंदरिया का धड़ तो नर्मदा में गिरकर बह गया, पर उसका सिर बांस की झाड़ियों में अटका रह गया था। अपनी कुरूपता से परेशान राजकुमारी ने ज्यों ही नर्मदा में डुबकी लगाई, त्यों ही उसकी सुंदरता वापस लौट आई।

नर्मदा और बावनगंगा के संगम पर स्थित चौंसठ योगिनी का मंदिर नवीं शताब्दी में शक्ति की उपासना का प्रतीक है। भेड़ाघाट का इलाका नवीं शताब्दी में त्रिपुरी" के नाम से जाना जाता था, जो कल्चुरी वंश के राजाओं की राजधानी थी। यूं तो कल्चुरी शैव थे, परन्तु उदार होने के साथ–साथ उनमें दूसरे संप्रदाय के प्रति भी आदर भावना थी। कल्चुरियों के काल में ही शक्ति सम्प्रदाय का चौंसठ योगिनी मंदिर बना।

इस मंदिर में प्रवेश के दो रास्ते हैं। एक रास्ता नर्मदा के तट से शुरू होता है। इस रास्ते में सीढ़ियों द्वारा दक्षिण पूर्व के प्रवेश की ओर से द्वार से मंदिर के अंदर जा सकते हैं। उत्तर पूर्व की ओर से प्रवेश करने वाला सीढ़ीदार रास्ता उस सड़क तक जाता है, जो पंचवटी घाट को धुंआधार से जोड़ता है। आजकल पर्यटक इसी रास्ते को प्रयोग में लाते हैं। मंदिर के प्रांगण से नर्मदा को देखकर ऐसा लगता है, मानो वह संगमरमर की चट्टानों की गोद में चुपचाप सोई हुई कोई मधुर सपना देख रही है। दो नदियों का संगम होने के कारण नर्मदा में पावन स्नान को हिन्दू श्रद्धालुओं में पवित्र माना जाता है। उनका मानना है कि नर्मदा और बावनगंगा के संगम में किया गया स्नान पाप से छुटकारा दिलाता है तथा मुक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

भेड़ाघाट का चौंसठ योगिनी मंदिर त्रिपुरी क्षेत्र में शक्ति धर्म के योगिनी संप्रदाय के प्रभाव की ओर इंगित करता है। योगिनी दुर्गा की प्रतिरूप समझी जाती है। मुख्य योगिनी 'मातृ की संख्या सात है। बाद में यह संख्या चौंसठ तक पहुँच गई। जो कलांतर में चौंसठ योगिनी के नाम से जानी गई।

इस मंदिर में इक्सठ प्रतिमायें विराजमान हैं। तीन प्रतिमायें मंदिर में नहीं हैं। हजारों साल पुरानी हरियाली लिए पीले बलुआ पत्थरों और लाल बलुआ पत्थरों की बनी मूर्तियां एक नहीं, कई सभ्यताओं और संस्कृतियों की कहानी कहती हैं।

निराली प्रकृति सुन्दरी के मनोभावों की ऐसी मनोहारी देन है–भेड़ाघाट, नर्मदा के तरंगों के संगीत में अपने आप को आत्मसात करता हुआ, जगह–जगह पक्षियों द्वारा कलरव–यह प्रदेश युग–युग से अपने सौंदर्य की कहानी कहता चलता आ रहा है। प्रकृति ने यहां असीम सौंदर्य प्रदान किया है। मन करता है–संगमरमर की इस खान को निरंतर निहारते रहें व नर्मदा के किनारे बैठकर निरंतर लहरों का मादक संगीत सुनते रहें।

सफेद संगमरमर की दूध से धुली चट्टानों, गुलाबी–काली–हरी चट्टानों, नदी की गोद से सूर्य का निकलना और डूबना, मानव मन से निःसन्देह कहता है कि प्रकृति की तरह प्रसन्न रहते हुए अपने गुणों की खान जन–साधारण हेतु लुटाते रहें। प्रकृति का मौन सन्देश सुनो व जीवन धन्य करो।

डी०वन०ए० 115,
जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

अनन्य-वचन

— रीमा कामरा

हमारी सौहाद्रता, साभारता हमारे व्यक्तित्व का आइना है। हमारे परिवार, समाज तथा देश का उत्थान हमारे 'स्वंय' एक छोटी किन्तु वृहद् एवम् महत्वपूर्ण इकाई से आरंभ होती हैं। हम अपना सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ की आपाधापी में बिताते हैं। अपने जीवन को लम्बा नहीं किन्तु सार्थक जीना चाहिए। हम अपने जीवन का अधिक समय उस चीज पर व्यर्थ ही लगा देते हैं जिसने हमारे साथ नहीं जाना अर्थात् हमारा शरीर। हमें इसे किराए के मकान की भांति प्रयोग करना चाहिए। उदाहरणः यदि बचपन में किराए पर ली साईकिल की याद करें उसे हम सीमित समय में अधिक से अधिक चला लेना चाहते थे क्योंकि वह समय–सीमा के भीतर वापिस देनी हैं इसी प्रकार हमें अपनी आयु अर्थात् निर्धारित समय–सीमा में शरीर भी त्यागना है अतएव इसका सदुपयोग करें।

हमारे समाज ने हमें चार वर्णो में तथा तत्पश्चात् हमने स्वयं को 'चार आश्रमों में हमारी आयु के कार्य के अनुसार बांट लिया किन्तु क्या हम अपने सन्यास आश्रम में वह कार्य कर सकते हैं जो हमें बाल्यावस्था से ही करना चाहिए था अर्थात् उस सर्वसत्ता का शुक्रिया जो हमें सब–कुछ देने वाली हैं, हम पर पल–पल छिन–छिन निगाह रखती हैं व हमारे जन्म से ही हमारी मृत्यु तक का सब लेखा–जोखा रखती हैं। हम नहीं सोचते, निर्भीक होकर स्वयं को ही सर्वस्व मानते हुए जीवन जीते हैं। उस ईश्वर के लिए तो हमारे पास समय वानप्रस्थ आश्रम में भी समय निकालना कठिन हो जाता हैं जब हमारे प्रायः सभी अंग जवाब दे जाते है। हम सम्पूर्ण जीवन धोखा, मक्कारी इत्यादि करने में ही बिता देते हैं। यदि हम साभार हमेशा उस सर्वसत्ता को सर्वत्र विद्यमान माने तो हम कोई गलत कार्य न करे। सदैव ईश्वर व मृत्यु को याद रखें तो सुचारू रूप से जीये।..... क्रमशः...

सहायक सम्पादक
पालिका समाचार
हिन्दी विभाग

कहानी

सन्त-महात्मा

— प्रेम भूषण गोयल

पिता जी ने अपनी आवश्यकताओं को बहुत घटा लिया था। मोटी धोती, कमीज़ और मोटिया मलमल का साफ तथा पैरों के लिए जूती। बस उन्हें यही चाहिए था। इससे अधिक कुछ भी नहीं। मैंने बचपन में अपने घर में गांधी जी की एक चित्राबेली को देखा था जिसे हिन्दुस्तान टाइम्स ने 1948 में प्रकाशित किया था। उस में से एक चित्र की आज मुझे बहुत याद आ रही है। वह था गाँधी जी की सम्पत्ति का चित्र। इस में उनकी ऐनक, क्लॉक, खड़ॉऊ, कलम–दवात, कटोरा और एक–दो जोड़े कपड़े दिखाये गए थे। इस चित्र को याद करके मैं सोचने लगा हूँ कि मेरे पिता जी के पास इन में से न ऐनक थी और न क्लॉक। और तो और वे तो महात्मा भी न थे। वे तो साधारण गृहस्थ थे, सामान्य जन। फिर भी उनकी जरूरतें न्यूनतम थीं। साधु–सन्तों को भी इनसे ज्यादा चीजों की जरूरत रहती है।

पिता जी के पास दुकान पर प्रायः सन्त महात्मा आया–जाया करते थे। वे उनकी खूब टहल–सेवा

किया करते थे। चूल्हे–पकता, अन्न–पानी उन्हें छकाते, दो घड़ी धर्म–चर्चा करते और उन्हें विदा करते हुए अपनी श्रद्धानुसार 11 अथवा 21 रुपए उनके चरणों में रख देते।

एक बार एक सन्त जी उनके पास आए। हरिद्वार से। पैरों में खड़ाऊँ और हाथ में कमण्डल। उनके चेहरे पर दैवी प्रकाश झलकता था। बड़े विद्वान लगते थे। पिता जी उन्हें गुरु जी कह रहे थे। शायद उनके गुरु ही हों। मगर पक्का पता नहीं। उन्होंने इस सम्बन्धी कभी घर में तो बात नहीं की। दो–तीन दिन सन्त जी रहे। रात्रि को सन्त जी चैना बाजार के बाघ स्थित संत सोम प्रकाश के डेरे पर चले जाते थे।

सन्त जी ने हरिद्वार लौटते समय एक पोटली अपने खीसे से निकाली और उसे पिता जी के समक्ष खोला। उसमें सोने की एक डालिया थी, पाँच–सात बड़े नोट थे। पोटली को दोबारा बन्द करते हुए सन्त जी ने पिता जी से कहा:

"इस पोटली को आप रख लें।"

"पर मुझे तो इस की जरूरत नहीं है, गुरू जी।"

"परन्तु मुझे तो इस की जरूरत पड़ सकती है, तब तक इसे रख लें।"

"महाराज, आपकी अमानत। मैं गृहस्थी रख लूं? मेरी परीक्षा लें रहे है आप?"

"नहीं, वत्स, मुझे तुम पर भरोसा है।"

"प्रभु। आपको तो भरोसा है, पर मुझे अपने आप पर भरोसा नहीं है। मैं गरीब हूँ, गृहस्थी हूँ।

कल को कोई ऐसी जरूरत आन पड़े कि मेरे पास इस अमानत को इस्तेमाल करने के अलावा कोई दूसरा चारा ही न रहे और उसे मैं खर्च कर बैठा और अपनी अमानत को लेने के लिए आप तुरन्त वहां प्रगट हो जाएँ, ऐसे में मेरी क्या हालत होगी, गुरु जी? आप क्या सोचेंगे अपने इस चेले–बालक के बारे में? यही कि भक्त की नीयत खराब हो गई।"

"पर मुझे पता है तुम अमानत में खयानत नहीं करोगे"

"आपके इसी भरोसे के बल पर तो मैं अभी तक जी रहा हूँ। परन्तु एक बात है, गुरुजी?"

"बतआलो, वत्स।"

"मान लीजिए, इस पोटली को मैं सम्भाल लेता हूँ। पेटी में भी रख देता हूँ। आपके विश्वास के अनुसार इसे अपनी किसी जरूरत के लिए भी इस्तेमाल नहीं करता। परन्तु यदि यह पोटली कोई चोर चोरी कर लेता है तो ऐसी पोटली को मैं कहाँ से पैदा करूंगा? मेरे पास न सोना है न इतना धन है। आपकी अमानत कैसे लौटा पाऊँगा? इसलिए मेरी आपसे बिनती है कि ...."

"क्या?"

"गुरुजी, यह कि मुझे इस अग्नि–परिक्षा में न डालिए। मैं तो पहले से ही इस संसार की भट्टी में जल रहा हूँ।" इतना कहते हुए उन्होंने सन्त जी के हाथों में पोटली थमा दी और उनके चरणों में 21 रुपए की तुच्छ भेंट को रखते हुए कहा–

"तथास्तु।" इतना कह महात्मा हरिद्वार की ओर प्रस्थान कर गए।

12, पावटे हाऊस,
पंजाब कृषि विद्यालय परिसर
लुधियाणा

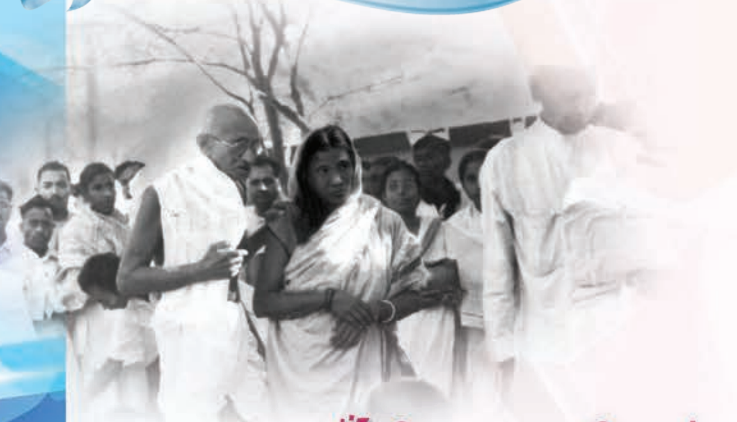

महात्मा गाँधी–अनुभूतियां एवं जीवन दर्शन

–पी.डी. सिंह

महात्मा गाँधी कहते थे, 'मानवीय गतिविधि के अतिरिक्त मैं किसी धर्म को नहीं जानता हूँ। और यही अन्य समस्त गतिविधियों को नैतिक आधार प्रदान करता है।' वे मानव जीवन की पूर्णता में विश्वास करते थे साथ ही समाज की समझदारी एवं मानसिक संतुलन में । उनके लिये मानव जीवन एक कृत्रिम समग्रता है जिसे मनमाने ढंग से विभक्त नहीं किया जा सकता। हर जीवन की नियति है, अच्छी प्रकार से और प्रतिष्ठा से जिया जाय।

गाँधी जी ने अपना जीवन अपने चिन्तन संपूरित संजोये सिद्वान्तों एवं मूल्यों के साथ जिया। उनके लिये जीवन एक ईश्वर प्रदत्त उपहार था अतः यह अपेक्षित था कि वह एकीकृत एवं सार्थक हो। वे ऐसे विद्वान या दार्शनिक नहीं थे जो अपने विचारों को कोई दर्शनशास्त्र का सिद्धान्त बतायें। उन्होंने विभिन्न विषयों पर बहुत कुछ लिखा है लेकिन यह सब लोगों को कुछ करने की दिशा में प्रेरित एवं निर्देशित करना ही था।

गाँधी जी का चिन्तन व सोच किसी विशिष्ट लीक से हटकर एवं क्रांतिकारी था। यह रचनात्मक प्रक्रिया सामयिक चुनौतियों से जूझने का उत्पाद था। उनकी सोच सहज थी। और उनकी कार्यप्रणाली सम्बद्ध थी। राष्ट्र के समक्ष खादी एवं कुटीर उद्योग अपनाने की बात कहीं तो किसी व्यवस्थित अर्थशास्त्री के रूप में नहीं बस सहज ढ़ग से इसकी उपयोगिता एवं प्रभाव स्पष्ट करके अपनाने की अपील की। उन्होंने सीधी और सरल घरेलू उपयोगिता को स्पष्ट किया। उन्होंने व्यापक दरिद्रता की चर्चा की, और लोगों के विवशतापूर्ण आलस्य को महसूस किया और सदैव यही उद्घोष किया कि भारत को जानना, समझना, जगाना है तो गांवों पर ध्यान दो क्योंकि वास्तविक भारत गांवों में ही है।

उन्होंने कभी–भी हिन्दू एवं मुस्लिम तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष अथवा विवाद को महत्व नहीं दिया। यद्यपि अपने आपको हिन्दू कहना उन्हें अच्छा लगता था लेकिन हिन्दू धर्म में व्याप्त निर्दयतापूर्ण छूआछूत का घोर विरोध किया और इसको दूर करने का व्रत लिया। वे जाति प्रथा में भी आस्था नहीं रखते थे। वे हिन्दू धर्म में प्रचलित कर्मकांड एवं रीति रिवाजों को नहीं स्वीकारते थे। उनका हिन्दुत्व गीता और उपनिषदों की शिक्षाओं पर आधारित था।

वे कहा करते थे, मैं मानव मात्र और विशेषतः दरिद्रनारायण की सेवा में ईश्वर के दर्शन कर लेता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न स्वर्ग में है न मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर में वह तो हर व्यक्ति में अन्तरव्याप्त है। ईश्वर को प्राप्त करने का सीधा और सही मार्ग है कि हम ईश्वर की सभी संतानों एवं समग्र प्रकृति से प्रेम करें एवं सेवा करें।

गाँधी जी की दृष्टि में धर्म एवं नैतिकता अन्योनाश्रित हैं और नैतिकता के आधार भूत सिद्धान्त हैं, सत्य एवं अहिंसा जो उनकी प्रार्थना 'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाणे रे..............' में अन्तर्निहित है। वे यह भी कहा करते थे कि 'धर्म मानव की रचना है अतः इसमें कमियां भी हैं और वे स्वयं मनुष्यों के कारण ही हैं।' गहरे अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर मेरी मान्यता है कि सभी धर्म अच्छे हैं और सच्चे है तथा सभी में कमियां भी हैं। मैं बाइबल, कुरान और जेंद अवेस्ता से भी उतना ही प्रभावित हूँ जितना कि वेदों से व रामायण इत्यादि से।' उनकी मान्यता थी कि धर्म की साधना किसी गुफा या पहाड़ की चोटी पर नहीं होती है। वे ईश्वर में आस्था रखते थे लेकिन ईश्वर का स्वरूप नैतिक मर्यादाओं एवं सेवा में ही मानते थे। ईश्वर भक्ति के रूप में वे प्रार्थना में दृढ़ आस्था रखते थे। उनकी प्रार्थना सभाओं में कभी

भी कोई देश भक्ति गीत नहीं गाया गया। वे कहते थे, 'देश से प्रेम अच्छा है और वांछनीय भी है पर इसे ईश्वर भक्ति नहीं कह सकते।'

गाँधी जी की आस्था आत्मसंयम में थी। वे अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने आत्मसंयम एवं संयमित जीवन को देते थे। वे जो कुछ कहते वहीं करते थे और जो करते थे वहीं कहते थे, उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता था। जो कहते उसे पूरा करते थे यही उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति का आधार था। वे कहा करते थे, एक सीमा के पश्चात् मनुष्य की इच्छाऐं उसके दुख का कारण बन जाती हैं अतः इच्छा व आवश्यकताओं को सीमित ही रखना चाहिए।

गाँधी जी द्वारा प्रेरित–निर्देशित आंदोलन सभी सहनशीलतायुक्त विरोध थे जैसे कि सविनय अवज्ञा, असहयोग आंदोलन इत्यादि। अपनी सभी ब्रिटिशराज विरोधी गतिविधियों को उन्होंने एक विशिष्ट शैली और नाम दिया, 'सत्याग्रह'।

'सत्याग्रह' मानवीय बंधुत्व में विश्वास करता है यह 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' की अवधारणा को नकारता है। सत्याग्रही विरोध तो प्रेम, पारस्परिक सहयोग एवं सहायता में विश्वास करता है। सत्याग्रह तो सत्य के प्रति दृढ़ निष्ठा का प्रतीक है और अहिंसा सत्य का स्वाभाविक उत्पाद है। 'सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने हैं जितने पहाड़, 'गाँधी जी कहा करते थे। बचपन से ही उनकी सत्य के प्रति निष्ठा थी। वे हिंसा को असत्य का उत्पाद मानते थे। सत्य और अहिंसा के साथ सत्याग्रह के लिये उन्होंने एक और सिद्धान्त का समायोजन किया, वह था 'साधन की पवित्रता' अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति के साधन का पूर्णतया पवित्र होना आवश्यक है।

गाँधी जी कहते थे कि गरीबी व्यापक नहीं होनी चाहिए। प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन करके व्यापक निर्धनता को दूर किया जा सकता है। दौलत समाज से ही आती है समाज में ही बराबर–बराबर बंट जानी चाहिए। किसी भी कारखाने या कार्यालय के कर्मचारी व मजदूर को जीवन के लिये आवश्यक भोजन, वस्त्र, घर, शिक्षा चिकित्सा इत्यादि सुविधायें मिलनी ही चाहिए।

उनका कथन एवं मान्यता थी कि 'प्रकृति और धरती माता हमारी आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त साधन प्रदान करती है लेकिन लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।' जब तक हम आवश्यकता से अधिक का उपयोग करेंगे विषमता नहीं जा सकती। उन्होंने चरखे को कमाई का व्यवसाय न बताकर केवल एक सहायक घरेलू उद्योग बताया था।

गाँधी जी हिन्दु–मुस्लिम एकता के समर्थक थे और कहते थे कि यह केवल आजादी की लड़ाई के लिये ही नहीं अपितु शान्ति काल में और सदैव सह–अस्तित्व के रूप में भी उतनी ही आवश्यक है राष्ट्र के सम्यक निर्माण, विकास एवं सहजीवन हेतु।

अहिंसा के समर्पित समर्थक के रूप में वे किसी भी प्रकार की सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक असमानता के विरोधी थे क्योंकि इससे शोषण पनपता है। भंगी, डाक्टर, शिक्षक वकील, व्यापारी या मिनिस्टर सभी के कार्य का समान महत्व है। वे स्त्री और पुरूष में भी भेद नहीं करते थे। वे बाल विवाह के विरोधी एवं विधवा विवाह के समर्थक थे। पर्दा प्रथा एवं दिखावे के खर्च के विरोधी थे। उन्होंने अपने सत्याग्रह आंदोलन में महिलाओं को भी सम्मिलित किया था। वे स्त्रियों के समान अधिकार एवं सम्मान के पक्षधर थे। वे किसी भी प्रकार के व्यसन के घोर विरोधी थे।

उनको 'नई तालीम' में सीखने के साथ समाजोपयोगी उत्पादन समाहित था। अपने रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा वे हाथ, मस्तिष्क एवं हदय के उन्नयन में ही एक स्वतंत्र देश के नागरिकों की अपेक्षा रखते थे। गाँधी जी वस्तुतः आधुनिक थे और स्वच्छता, स्वास्थ्यप्रद भोजन, शारीरिक श्रम का सम्मान, महिला शिक्षा आर्थिक समानता सबके अधिकारों की सुरक्षा एवं जनतांत्रिक भावना, अछूतो से निकट संपर्क दरिद्र नारायण की सेवा तथा वासना मुक्त होना यही उनकी आधुनिकता थी।

कालजयी युगपुरूष राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने न केवल स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये अहिंसक संघर्ष हेतु प्रेरित किया अपितु राष्ट्र की जनता को सार्थक, प्रभावी, शान्त, सत्यनिष्ठ एवं अहिंसावादी जीवन जीने की राह दिखाई। उस महामना मनीषी, संत, देशभक्त एवं समर्पित समाजसेवी को नमन, वन्दन, अभिनन्दन!

डायरेक्टर, टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
शास्त्री नगर,जयपुर–302016

तीन कवितायें

—नितिन नारंग 'समर'

(1)

क़ाश

क़ाश!
मैं तस्वीर बना सकता
तुम्हें उसके रंगों में उभारता,
क़ाश
मैं अमीर होता
तुम्हें गहनों से सजाता,
क़ाश चले जाते मेरे
हाथ आकाश तक
चाँद—तारे
मैं तेरे कदमों में डाल देता।
कुछ न सही
लेकिन फिर भी
ओ मेरी कविता!
अंतिम अक्षर तक
मैं तेरा साथ देता,
क़ाश
मैं कवि होता!

(2)

सपने

बेमौसम,
बेचैन
धुंध
और
और क्या?
और फड़फड़ाते सपने!
आँखों में।

(3)

सात रंग

घुटन को चीरकर
साँस जैसे मस्ती में चलने लगी।
मुद्दतों से जमी भड़ास
पलों में पिघल गई।
आँखों की वह नमी
जो गर्म धाराओं में ढुलकने लगी,
मेरे लिए खूबसूरत
सात रंग लाई।

362, एस.एफ.एस.फलैट्स
अशोक विहार, फेज—4, दिल्ली—110052

विवेकानन्द जयन्ती 12 जनवरी

हमारे आदर्श स्वामी विवेकानन्द

–महेश चन्द्र शर्मा

उन्नीसवीं शताब्दी में जब अंग्रेजी शिक्षा के जादू से जिस समय भारत का युवक वेद,उपनिषदों, गीता, महाभारत और धर्म ग्रन्थों की तीव्र निन्दा करने लगा था और इन ग्रन्थों को अन्ध विश्वासों का भण्डार कहने लगा था उसी समय विश्व में वेदान्त का डंका बजाने, हिन्दुत्व और अध्यात्म की प्रतिष्ठा स्थापित कर उसके प्रचार करने के बाद भारत लौटने पर स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि हमारा राष्ट्रभारत गावों और झोपड़ियों में बसता है उसके पौरुष को जगाना है। गरीबों के खोये हुये व्यक्तित्व को जाग्रति प्रदान करना होगा। हमारा एकमात्र जागृत देवता हमारा राष्ट्र भारत है। इस विराट की पूजा ही हमारी पूजा है। सबसे पहले हम जिस देवी की पूजा करेंगे वह भारतमाता है और भारतवासी हमारे प्रथम देवता हैं।

उन्होंने सभी देशवासियों से कहा था ''पाश्चात्य देशों में आने से पहले मैं अपने भारत को हृदय से प्रेम करता था, किन्तु अब मेरे लिये भारत की वायु यहां तक कि भारत का प्रत्येक धूलिकण स्वर्ग से भी अधिक पवित्र है। भारत–भूमि पवित्र भूमि है। वह मेरी माँ है, भारत मेरा तीर्थ है।''

स्वामी विवेकानंद जी ने संभ्रान्त देशवासियों, युवकों और सन्यासियों से कहा, ''देखों! ये भारतीय असहाय, असमर्थ, निरक्षर–जन कितने सरल हृदय हैं! क्या तुम इनके कष्टों को कुछ भी कम न कर सकोगे? तुम अपने जीवन को दरिद्रनारायण को अर्पित कर दो। हमारे देशवासी जब रोटी–कपड़े को तरस रहे हों, क्या हम अपने मुख में ग्रास लेते लज्जित नहीं होते? गाँव–गाँव में घूमकर असमर्थ, असहायों और दलितों की सेवा में जीवन अर्पित कर दो, अपाने चरित्र बल से, आध्यात्मिक शक्ति से, पवित्र जीवन से, सम्पन्न महानुभावों को समाज के प्रति उनके कर्त्तव्यों का बोध कराओ, धन व साधन संग्रह करो, जिससे दीन दुखियों की सेवा हो सके, उन्हें शिक्षित किया जा सके और उनकी दरिद्रता दूर हो सके क्योंकि शिक्षित और ज्ञानवान होने पर व्यक्ति अपनी प्रगति का मार्ग स्वयं खोज लेगा।''

स्वामी विवेकानंद की प्रतिभा सर्वोत्तमुखी थी। ये योगी, तत्वदर्शी, गुरु, नेता, ज्ञानी धर्मप्रचारक और एक महान राष्ट्र निर्माता थे। इन्होंने पाश्चात्य देशों में वहां के निवासियों के समक्ष, भारतीय धर्म का खजाना खोलकर देश का सिर ऊंचा किया। ऐसे स्वामी विवेकानंद को प्रत्येक युवा भारतीय अपना आदर्श मानने लगे।

विवेकानंद का जन्म कलकता महानगर में 12 जनवरी 1863 को एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त एवं माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। उनके बचपन का नाम नरेंद्र था। पिता विश्वनाथ दत्त बुद्धिवादी एवं प्रगतिशील विचारों

वाले व्यक्ति थे। भुवनेश्वरी देवी धर्मनिष्ठा महिला थीं। बचपन से ही नरेन्द्र अत्यंत चंचल एवं जिद्दी स्वभाव के थे।

1885 ई. में रामकृष्ण गले के कैंसर रोग से पीड़ित हुए। नरेन्द्र नाथ ने अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति से उनकी सेवा की। अध्यापन का कार्य भी छोड़ दिया इससे प्रसन्न होकर रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें सन्यास की दीक्षा दी।

सन्यास ग्रहण के पश्चात् नरेन्द्र नाथ को अब विवेकानन्द का नया नाम मिल गया था। गुरु ने शक्तिपात कर अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ अपने नवसन्यासी शिष्य को सौंप दी ताकि वह विश्व कल्याण कर भारत का नाम गौरवान्वित कर सके।

11 सितम्बर 1893 ई. को स्वामी जी ने इस विराट सर्वधर्म–सम्मेलन में हिन्दुत्व की महानता विश्व बन्धुत्व की भावना को प्रतिस्थापित कर पूरे विश्व को ''माई डियर ब्रदर्स एंड सिस्टर्स'' के सम्बोधन से चौंका दिया। उन्होंने उद्घोष किया कि मुझको ऐसे धर्मावलम्बी होने का गौरव है जिसने संसार को 'सहिष्णुता' तथा सब धर्मों को मान्यता प्रदान करने की शिक्षा दी है। तथा वसुदैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ाया है।

स्वामी जी ने विदेशों में हिन्दू धर्म की विजय पताका पफहराने के बाद भारतभूमि में पदार्पण किया और स्थान–स्थान पर भ्रमण कर उतिष्ठ जागृत का सन्देश दिया और नवयुवकों को आगे बढ़ने एवं देशभक्ति की प्रेरणा दी। उनका महावाक्य था–सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय का नारा विश्व को देकर 4 जुलाई 1902 को वे इस धरा से प्रस्थान कर गए। इसीलिये इनके जन्म दिवस 12 जनवरी को सम्पूर्ण भारत में युवा दिवस के रुप में मनाया जाता है। ऐसे स्वामी विवेकानंद जी को भारत विकास परिषद् ने अपना आदर्श माना है, जिसका (भारत विकास परिषद्) उद्देश्य है भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बढ़ाते हुए गौरवशाली भारत का निर्माण करना।

विवेकानन्द के बहुमूल्य वचन

- ज्ञान मनुष्य के अन्तर्निहित है। कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता। सभी कुछ है।
- उठो! जागो! और तब तक न रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।
- कौन सा धर्मग्रंथ यह कहता है कि महिलाएं ज्ञान और आस्था के लिए सक्षम नहीं हैं।
- एक विचार को अपने मन में बांध लो। उसी विचार को अपना जीवन बना लो। उसके बारे में सोचो, उसी के सपने देखो और उसी विचार को जिओ।
- हम जो कुछ भी हैं, जो भी करना चाह रहे हैं, उसके लिए हम जवाबदेह हैं। हमारे पास अपने आपको बनाने की असीम क्षमता है। हम वर्तमान में जो कुछ भी हैं, यह हमारी भूतकाल में की गई कृतियों का परिणाम है।
- जाति प्रथा वेदांत के धर्म के सर्वथा विरुद्ध है। जाति एक सामाजिक प्रथा है और सभी उपदेशकों ने उसे तोड़ने का प्रयास किया है।
- केवल कुछ लोग हैं जो मस्तिष्क की भाषा समझते हैं, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति वह भाषा नहीं समझता है जो दिल से आती है।
- प्रेम सभी असंभव दरवाजे खोलता है । प्रेम ब्रह्मांड के सभी रहस्यों का दरवाजा है । प्रत्येक कदम पर जिसने इस विश्व में नाम कमाया है, वह प्रेम से ही आया है।

पूर्व महापौर

संरक्षक, भारत विकास परिषद्, दिल्ली

(बसन्त पंचमी पर विशेष)

"ऋतु–बासन्ती"

– के०के०शर्मा

खेतों ने पीताम्बर ओढ़ लिया,
वन–उपवन सभी हुए गुलज़ार।
महक उठा देखो संसार,
मन में ठांठें मारे प्यार ।।2।।
ऋतु–बासन्ती राजकुमारी,
रति, काम सृष्टि आधार।
झूठे पात–पात पतझर की मार,
फूलों से लदी है डार–
बसन्त बहार ।।2।।

तितली को देख, उड़ने की चाह,
भँवरों की गूँज, भरे मधु भण्डार।
खेतों ने पीताम्बर ओढ़ लिया,
वन–उपवन सभी हुए गुलज़ार।

देश धरा से जुड़ा पर्व ये,
भगत कहे, "मेरा रंग दे–
बसन्ती चोला।"
पीत वसन गणपति को भायें,
हाथ उठाकर गण भूषक बोला।।2।।

पीताम्बर धारण करे कन्हैया,
पहने कण्ठ वैजन्ती हार।
वर दे वर दे, माँ वीणावादिनी,
दिश–दिश गूँज उठी जयकार।
खेतों ने पीताम्बर ओढ़ लिया,
वन–उपवन सभी हुए गुलज़ार।

आर.जेड–2000–सी/25, (एफ/एफ)
तुग़लक़ाबाद विस्तार,
नई दिल्ली–110019

लेखकों से अनुरोध

'पालिका समाचार' पत्रिका में किसी भी विधा की उत्कृष्ट रचना का स्वागत है।
रचना काग़ज़ पर एक तरफ हस्तलिखित या टंकित हो।
लेखक रचना की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।
रचना का मौलिक एवं अप्रकाशित होना अनिवार्य है।
अपनी रचनाओं को लेखक editor palika samachar@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।

पाठकों से

प्रिय पाठको !

'पालिका समाचार' में प्रकाशित रचनाओं के संदर्भ में हमें आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों का इंतजार रहेगा।

–सम्पादक

सांप्रदायिकता

संकुचित मानसिकता का परिचायक

–चन्द्र शेखर भट्ट

आज भारत में अनेक समस्याएं हैं। उनमें सांप्रदायिकता की समस्या प्रमुख है। इसके समाधान के लिए आवश्यकता है साम्प्रदायिकता सौहार्द की, एक विकसित मानसिकता की। किसी भी व्यक्ति का परिचय उसकी मानसिकता से ही मिलता है। संकुचित मानसिकता वाले ही सांप्रदायिक समस्याओं को उत्पन्न करते है। संकुचित या विकसित मानसिकता ही व्यक्ति का परिचायक होती है। व्यक्ति अपने माहौल को, वातावरण को तभी सुलझा सकता है, जब उसकी मानसिकता विकसित होगी। आज व्यक्ति खामोश देख रहा है अपने आसपास के वातावरण को। देश में फैली सांप्रदायिकता की आग को चाहते हुए भी वह कुछ नहीं कर सकता। दूसरी ओर व्यक्ति उग्र रूप धारण करता जा रहा है। सांप्रदायिक समस्या क्या है? क्यों यह समस्या पैदा हो रही है? कौन इन समस्याओं को उपजा रहा है? इसके पीछे किसी का क्या उद्देश्य हो सकता है? यह सब जानने के लिए हमें किसी भी व्यक्ति की मानसिकता को जानना होगा। विभिन्न संप्रदायों में कोई विभेद होने पर ही यह समस्या उत्पन्न होती है। इसके पीछे किन्ही स्वार्थी लोगों का हाथ होता है यह समस्या उनके संकुचित दृष्टिकोण का ही परिणाम है। संप्रदाय को धर्म के साथ नहीं जोड़ना चाहिए। धर्म तो समाज के नियमों को कहते है। जो संप्रदाय कभी सम्मान व श्रद्धा का सूचक था, आज वही घृणा व अपमान का परिचायक है। आज कहीं भी दंगे होते हैं तो उसे सांप्रदायिकता का नाम दे दिया जाता है। इसका प्रयोग कोई भी सही अर्थ में नहीं करता। जब किसी व्यक्ति में दूसरे संप्रदाय के व्यक्ति के प्रति असहिष्णुता की भावना पैदा होती है तो उसका विष इतनी तेजी से फैलता है कि वे एक–दूसरे को सहन नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में सांप्रदायिक रूप से ग्रस्त लोगों में राष्ट्र के प्रति निष्ठा नहीं होती, तब उनमें किसी विशेष जाति प्रांत व भाषा के प्रति निष्ठा होती है। जहाँ सांप्रदायिकता होती है वहाँ राष्ट्रीयता नहीं पनप सकती क्योंकि ये आपस में विरोधी है। सांप्रदायिक रूप से ग्रस्त व्यक्ति, राष्ट्रीयता का समर्थक नहीं हो सकता। देश के लिए तो सांप्रदायिकता सबसे बड़ा अभिशाप है। अंग्रेजों ने यहाँ ''फूट डालो और राज करो'' की नीति के आधार पर शासन किया और आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी सांप्रदायिकता जीवित है।

भारत में कुछ प्रांत ऐसे है जो सांप्रदायिक भावना से ग्रस्त है। आज वो सौहार्द नहीं है, जो पहले था। जो देश शांति व अहिंसा का पुजारी हो, वहाँ सांप्रदायिक भावना कैसे फैली? आपसी टकराव बाहरी तत्व के लिए फायदेमद होता है चाहे वह स्थिति परिवार की हो या देश की। यह सब तब ही समाप्त हो सकता है जब धर्म को संप्रदाय से ज्यादा राष्ट्र को महत्व दिया जाएगा। देश की एकता व अखंडता के लिए यह आवश्यक है कि सांप्रदायिकता की भावना पैदा ही न हो। इसके लिए सरकार के साथ–साथ प्रत्येक नागरिक को सजग रहना होगा।

कोष विभाग, न.दि.न.परिषद

मैं ढूँढता एक दुपट्टा

– ए. के. बहुगुणा

मैं ढूंढ रहा हूँ एक दुपट्टा
जो आँचल बन जाये।
पिता के रूप में,
लेकिन किसी के लिए माँ बन जाये।।
उम्मीद हर कोई करता है,
मुझे, तुझे और बच्चे तुम्हें भी करनी चाहिए। क्योंकि
दुपट्टा बेटी का, आँचल माँ का, सभी को चाहिए।।
जब–जब देखता हूँ कि दुपट्टा नहीं पास बेटी के,
"तो भविष्य में बनने वाले माँ के आँचल के न होने का
डर तकलीफ देगा बच्चे को, इससे डरता हूँ"
फिर कोशिश करता हूँ।
मैं ढूंढता एक दुपट्टा
ये दुपट्टा तेरी–मेरी जान है, शान है, मान है, अभिमान है।
क्योंकि इससे रिश्ता तेरा–मेरा,
पैदा होने से लेकर–माँ, बहिन, बेटी, बीबी
फिर घूमता हुआ परिवार का आइना है।।

ई–एस/एस–11 के.वी./33 के.वी.
रेस कोर्स, एन.डी.एम.सी., ओल्ड विलिंगडन कैम्प,
नई दिल्ली–110011

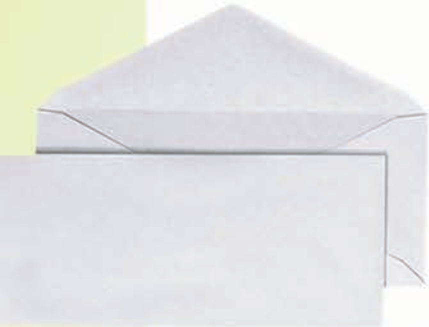

दो कवितायें

पता

विरासत

— रवीन्द्र नन्दा

बहुत दिनों के बाद
आयी है
मां
तेरी चिट्ठी

जाते वक्त
पता नही क्यों
जल्दी–जल्दी में
नहीं दे गयी थी तू
अपने ठौर ठिकाने का पता ?

नहीं तो
पूछ लिया करता
वक्त बेवक्त
तेरी सुख साद ।

मां ! तुझे
बहुत सी बातें
लिखनी थी
खत में
मुझे ।

पर यह क्या ?
बेटे के साथ
इतनी बेइन्साफी
अपना पता
अब भी
नहीं लिखा
तूने खत में ।

तुम्हारे जाने के बाद
दायरा ही नहीं
जिन्दगी भी सिमट कर
रह गयी मां

घर की चारदीवारी के भीतर
कुछ यादें जागती
कुछ ऊंघती
कुछ कब की सों चुकी है

पर फिर भी
कुछ है मां
जो अभी भी
तुम्हारे जाने के बाद
मेरी जिन्दगी को
मजबूर करता है
वो सब करने को
जो तुम
छोड़ गयी थी
विरासत में
शायद मेरे लिए !

कार्यकारी सम्पादक
पालिका समाचार (पंजाबी)

संदर्भः नया वर्ष

– नित्यानन्द जोशी

उपहार

(1) की–रिंग तो साल दर साल से
देते आए हो लाला।
पर चाबी
हर साल ही
अपने पास ही रख लेते हो, लाला।
हम
खाली छल्ला
अगुंली पर
घुमाते रह जाते है, लाला।
और तुम,
बतियाते– बतियाते,
दफ्तर की
तमाम दराजें
टटोल जाते हो, लाला।

डायरी

(2) तुम्हारे क्या काम आएगी,
बाबू।
बीबी जी के लिए है,
बनिए का बिल,
बनाएगी बाबू।
तुम्हारे लिए,
बटुआ लाया हूँ।
चौंको मत,
खाली है,
भीतर से भी।
बाहर से भी।

कैलेण्डर

(3) बड़े बाबू को तो
आँख कम दिखता है,
इसलिए, कैलेण्डर
मोटी तारीखों वाला चाहिए।
आपके लिए कैसा लाऊँ?
छोटे बाबू?
तारीखों वाला,
कि तस्वीरों वाला?
हमने तो
दोनों ही छापे है,
च्वाइस आपकी।
जैसा कहो
हम तो सेवक है आपके,
राय मानो तो
तस्वीरों वाला ही ले जाओ।
घर में काम आएगा
बच्चे खेल लेंगे
तारे सितारों से।

परिचय

(4) मैं,
शस्त्रधारी सैनिक तो नहीं,
जो बनकर खड़ा हो जाऊँ
यहाँ वहाँ
जहाँ तहाँ।
मैं,
बंदूक की गोली से,
(पराई ताकत से)
न डरा पाऊँ,
इसे
उसे
जहाँ तहाँ।
मैं,
नदी किनारे का पेड़ हूँ,
डोलता हूँ,
हवा में,
शब्द–पत्र बिखेरता हूँ
चुपके चुपके।
समेट सको तो समेट लो,
नहीं तो बन्धु।
बिखेर दो हवा में,
नीले आकाश की ओर
मुझे तो
डोलना ही भाता है।

–99, कुर्मांचल निकेतन
परपड़गंज, दिल्ली–110092

परिषद् गतिविधियाँ

14 नवम्बर, 2013 को इंडिया गेट स्थित चिल्ड्रन पार्क में परिषद् अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने पुस्तकालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर निदेशक (शिक्षा) श्रीमती विदुषी चतुर्वेदी, शिक्षा विभाग के अधिकारीगण के अतिरिक्त परिषद् विद्यालयों के विद्यार्थियों एवम् अध्यापकगण भी उपस्थित थे।

19 नवम्बर, 2013 को इंडिया गेट स्थित चिल्ड्रन पार्क में शिक्षा विभाग द्वारा उर्दू दिवस समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर निदेशक (शिक्षा) श्रीमती विदुषी चतुर्वेदी, नोडल अधिकारी (उर्दू) श्रीमती अनीस फातिमा के अतिरिक्त परिषद् विद्यालयों के विद्यार्थी एवम् अध्यापक भी उपस्थित थे। समारोह में बच्चों द्वारा प्रसिद्ध शायर इकबाल की उर्दू शायरी (नज़मी एवम् ग़ज़ले) प्रस्तुत की गयी।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् में 28 अक्टूबर से 2 नवम्बर, 2013 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस सतर्कता जागरूकता सप्ताह का प्रारंभ 28 अक्टूबर को परिषद् अध्यक्ष द्वारा कर्मचारियों एवं अधिकारियों को भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ने तथा पालिका सेवाओं में पारदर्शिता लाने की शपथ दिलाकर किया। इस सप्ताह के दौरान परिषद् विद्यालयों में निबन्ध एवं वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया ।

परिषद् गतिविधियाँ

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के अध्यक्ष श्री जलज श्रीवास्तव ने दिनाँक 15.12.2013 को ''सी.पी.आर. 10 उत्सव'' का उद्घाटन तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में किया। यह कार्यक्रम नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् एवम् हार्ट केयर फाउंडेशन के सौजन्य से आयोजित किया गया। डॉ. के. के. अग्रवाल एवम् डॉ. पी. के. शर्मा ने इस तकनीक के विषय में जानकारी दी। अगर हार्ट अटैक के 10 मिनट के अंदर सीपीआर 10 तकनीक का इस्तेमाल किया जाए तो रोगी को बचाया जा सकता है। इस अवसर पर भारी संख्या में स्कूली बच्चों वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों को इस तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया ।